कृषक समृद्धि की ओर –

सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव

उत्तर प्रदेश 2019

भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर
ICAR-AGRICULTURAL TECHNOLOGY APPLICATION RESEARCH INSTITUTE, KANPUR

कृषक समृद्धि की ओर :
सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव
उत्तर प्रदेश 2019

भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान,
जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर–208 002

उद्धरणः
अतर सिंह, यू.एस. गौतम, एस.के. दुबे, एस. एन. येमुल एवं शंकर सिंह 2019, कृषक समृद्धि की ओर – सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव, भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, उत्तर प्रदेश २०१६, पृः53

दिशा निर्देशनः
डा. ए.के. सिंह उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार), भाकृअनुप, नई दिल्ली

मुख्य सम्पादकः
डॉ. अतर सिंह

सम्पादक मंडलः
डॉ. यू.एस. गौतम
डॉ. एस.के. दुबे
श्री एस.एन. येमुल
डॉ. शंकर सिंह

सहायकः
श्री श्रवण कुमार यादव
श्री कुलदीप कुमार

प्रकाशन वर्षः
जून, २०१६

मुद्रितः
सोलर प्रेस
96/2, चुन्नीगंज, कानपुर–208 001
9839030542

प्राक्कथन

भारतीय कृषि का बहुत प्राचीन इतिहास रहा है, यहाँ के निवासियों की आवश्यकता, जमीन, जल, जलवायु, जीव–जन्तु, जानवर, जन, जीवाणु, जंगल को दृष्टिगत रखते हुए कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव होते रहे हैं। प्राचीन कृषि के महान वैज्ञानिक घाघ, भड्डुरी के शोध पर आधारित कृषि फलती–फूलती रही है, परन्तु बढ़ती आबादी, प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन, वर्षा की अनिश्चितता, जलवायु परिवर्तन एवं कृषि में बढ़ती लागत एवं अधिक जोखिम से कृषि में किसानों /वैज्ञानिकों/नीति निर्माताओं को चिन्ता में डाल दिया है। इसी चिन्ता का हल ढूढ़ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के निर्देशन में काम कर रहेप्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों को किसानों के साथ मिलकर, नवोन्मेषी कृषक जो कि दूसरे किसानों से हट कर नया कर रहे हैं तथा कृषि को लाभकारी बनाने में उनके अभिनव प्रयोग सम्पूर्ण कृषि में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकते हैं, उन्हें पहचान कर उनके विशाल अनुभव एवं आज की जरूरत जिसमें लाभ के साथ–साथ भूमि की उर्वरा शक्ति, पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा रहा है, इन्हें संकलन कर अन्य किसानों के लिये उत्प्रेरक का काम करेंगे, ऐसा अलौकिक प्रयास है।

चिन्हित नवोन्मेषी कृषकों के द्वारा जिनके अभिनव प्रयोग हुए हैं जो तकनीकी एवं आर्थिक दृष्टि से फलीभूत हैं तथा अपने–अपने क्षेत्रों में स्वीकार्य भी हैं उन्हें संकलित कर एक प्लेटफार्म पर लाकर वैज्ञानिकों द्वारा शोध करने के उपरान्त नयी तकनीकी, जैसे क्षेत्र विशेष हेतु संस्तुति प्रजाति, दुधारू पशुओं की उन्नत नस्ल, फसल पद्धति, रसायनों का समुचित प्रभावकारी उपयोग, नया प्रयोग जिसे प्रथम आगे आकर जागरूकता से आग्रहण किया और सफल रहा वही नवोन्मेषी कृषक होता है। जिसे देखकर अन्य कृषक अपनाते हैं। यही अनुभव अन्य क्षेत्र मे विस्तार ले लेता है। इसी अन्वेषण को सामाजिक आर्थिक स्वीकारिता कृषि विकास में मील का पत्थर साबित होती है। नवोन्मेषी कृषक अपने आस–पास के क्षेत्र में तकनीक विस्तारित करते हैं तथा समान जलवायुविक क्षेत्रों में इस तकनीक का विस्तार व्यापक देखा गया। विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त कृषक नवोन्मेषी तकनीकी का संकलन प्रदेश के अन्य कृषकों में कृषि विकास में एक नये आयाम स्थापित करेगा इसी आशा और विश्वास के साथ हमारे प्रयासों में आप सभी की भागीदारी की हम पुरजोर अपील करते हैं।

सम्पादक मंडल

संदेश

त्रिलोचन महापात्र, पीएच.डी.
सचिव एवं महानिदेशक
TRILOCHAN MOHAPATRA, Ph.D.
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली ११० ००१
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNTIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629, 23386788 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), जोन–।।। कानपुर द्वारा "कृषक समृद्धि की ओर : सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव" को संकलित करके प्रकाशित किया जा रहा है । खेती–बाड़ी की सबसे अधिक समझ और अनुभव हमारे किसानों के पास होता है जो उन्हें विरासत में पीढ़ी–दर–पीढ़ी मिलता है और इसमें नई उन्नत तकनीकों का प्रयोग करके किसानों की सफलता में अभिवृद्धि होती है । निश्चित तौर पर ऐसे सफल किसानों के अनुभव उपयोगी सिद्ध होंगे । अतः "वर्ष २०२२ तक किसानों की आय को दोगुना करना" के संकल्प को साकार करने में इन नवोन्मेषी किसानों के अनुभवों को साझा करना अत्यंत उपयोगी होगा ।

इस दिशा में किए गए प्रयासों के लिए मैं संस्थान की सराहना करता हूं और इसकी सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं ।

त्रि. महापात्र

दिनांक : 03.05.2019

(त्रिलोचन महापात्र)

संदेश

डॉ. अशोक कुमार सिंह
उप महानिदेशक (कृषि प्रसार)
Dr. A.K. Singh
Deputy Director General (Agril. Extention

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि अनुसंधान भवन–१, पूसा, नई दिल्ली ११० ०१२
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
Krishi Anusandhan Bhawan, Pusa, New Delhi 110 012
Ph: 91-11-25843277 (O), Fax: 91-11-25842968
E-mail: aksicar@gmai.com

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर, "कृषक समृद्धि की ओर : सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव" का संकलन प्रकाशित करने जा रहा है।

प्रगतिशील कृषकों के अनुभव अन्य किसानों के लिए तकनीकी को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रकाशन के सफलता हेतु संस्थान के निदेशक डॉ. अतर सिंह एवं उनकी टीम को मेरी ओर से हर्दिक बधाई।

दिनांक : 02.05.2019

(अशोक कुमार सिंह)

संदेश

डॉ. (प्रो.) सुशील सोलोमन
कुलपति

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर (उ.प्र.)

आधुनिक समय में कृषि के अन्तर्गत वैज्ञानिकों द्वारा अनेकों अनुसंधान हुए हैं परन्तु धरातल में कुछ किसान कृषि में नये–नये प्रयोग कर शोधकर्ताओं को अचम्भित कर रहें हैं । ऐसे ही प्रयोग जो विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सफलता सिद्ध कर चुके हैं, उन्हें चिन्हित कर कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा "सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव " के रूप में संकलित कर अटारी, कानपुर द्वारा प्रकाशित किया जा रहा हैं ।

यह प्रकाशन निश्चित ही अन्य किसानों के लिए प्रेरणादायी होगा। मैं प्रकाशन की सफलता हेतु संस्थान के निदेशक एवं उनकी टीम को बधाई देता हूँ।

(सुशील सोलोमन)

संदेश

प्रोफेसर जे.एस. सन्धू
कुलपति
पूर्व कृषि आयुक्त, भारत सरकार
Professor J.S. Sandhu
Vice Chancellor
Ex Commissioner (Agri) GOI

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या –224 229 (उ. प्र.) भारत
Narendra Deva University of Agriculture & Technology
Kumarganj, Ayodhya – 224 229 (U.P.) India

यह जानकर हर्ष हो रहा है कि भाकृअनुप, अटारी कानपुर द्वारा प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के प्रयासों से जनपदों में अग्रणीय कृषकों ने कृषि आधारित तकनीकी विकसित की है। इन तकनीकियों को "सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव" के रूप में संकलित कर प्रकाशित किया जा रहा है।

उक्त प्रकाशन कृषकों के लिये अत्यन्त उपयोगी होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। संस्थान के निदेशक एवं उनकी टीम को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

(जे.एस. सन्धू)

Ph.: +91 5270 262161 (O), Telefax: 262097 (O), 262842, Telefax: 262032 Email: vcnduat2018@gmail.com

संदेश

प्रोफेसर गया प्रसाद
कुलपति

सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
मेरठ (उ.प्र.)

आजादी के बाद कृषि क्षेत्र में असम्भावी प्रगति हुई परन्तु अभी भी इस क्षेत्र में काफी सम्भावनाएं हैं । कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि तकनीकी को किसानों के खेतों तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं । प्रत्येक जनपद में कुछ विशिष्ट कृषक नई–नई खोज कर ऐसे प्रयोगों का सफलतम परिणाम लाने में कामयाब रहे जो दूसरे किसानों को प्रेरणा दे रहे हैं जो कि शोधकर्ताओं के लिए कौतूहल से कम नही है।

इन्हीं प्रयोगों को "सीख परक नवोन्मेषी कृषकों के अनुभव " के रूप में संकलित कर भाकृअनुप–अटारी कानपुर द्वारा एक साहित्य के रूप मे प्रकाशित करने जा रहा है। यह अलौकिक प्रयास निश्चय ही सराहनीय है।

मैं प्रकाशन हेतु संस्थान के निदेशक एवं उनकी टीम को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके प्रयास से कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलेगा।

(गया प्रसाद)

विषय सूची

क्रमांक	जनपद	नवाचार	पेज
1	प्रस्तावना	सीख परक नवोन्मेषी कृषक	1
2	बहराइच	मेंड़ों पर तरबूज के उत्पादन की तकनीक	4
3	बस्ती	भूसा सहित कम्बाइन मड़ाई मशीन के प्रयोग का प्रभाव	5
4	बलिया	पलवार पद्धति से मचान विधि द्वारा लौकी की खेती	6
5	मऊ	शुष्क क्षेत्रों में अरहर की पौध तैयार करने की विधि	7
6	सिद्धार्थनगर	परिवर्तित वॉटर पम्प से लिफ्ट सिंचाई	8
7	महाराजगंज	टिसू कल्चर तकनीक से केला की खेती का आगाज	9
8	सोनभद्र	हल्दी एवं सूरन की खेती	10
9	आजमगढ़	सब्जी मटर की नालियों में गन्ना की सह–फसली कृषि सघनीकरण	11
10	बलरामपुर	सामाजिक आर्थिक परिदृश्य में बकरीपालन में नस्ल का उन्नयन	12
11	चन्दौली	मेड़ों पर अरहर की खेती की तकनीक	13
12	जौनपुर	फसल उत्पादन के साथ औधानिक फसलों की संरक्षित कृषि	14
13	झाँसी	कृषि के साथ व्यवसायिक डेयरी उद्योग	15
14	रायबरेली	एकीकृत कृषि प्रणाली	16
15	कन्नौज	आलू के साथ कद्दू की सहफसली खेती	17
16	इटावा	कृषक नवोन्मेषी गेहूँ प्रजाति ए–1 धान प्रजाति महाक्रान्ति का उत्पादन	18
17	महोबा	मछली पालन द्वारा जीवन स्तर के सुधार मे स्थायित्व	19
18	फिरोजाबाद	पालीहाउस में बेमौसम सब्जी उत्पादन	20
19	हमीरपुर	उन्नति प्रजाति द्वारा फलोद्यान	21
20	फर्रूखाबाद	पालीहाउस में खीरा एवं फूलों की खेती	22
21	जालौन	वर्मीकम्पोस्ट	23
22	हरदोई	टमाटर की खेती	24
23	हाथरस	जैविक खेती द्वारा फसल उत्पादन	25
24	मथुरा	भिण्डी में जैविक कीटनाशी का प्रयोग	26
25	बिजनौर	गन्ने में सघन सहफसली खेती	27
26	रामपुर	अधिक लाभ हेतु लघु किसानों के लिए ब्रायलर पालन बेहतर विकल्प	28
27	सहारनपुर	गन्ने के साथ आलू की सहफसली खेती	29
28	गाजियाबाद	लेजर लेवलर का व्यवसायिक उपयोग	30
29	शाहजहाँपुर	सिल्वर पलवार एवं फ्रिब्स विधि द्वारा खरबूजा की खेती	31
30	मेरठ	गन्ना से सिरका तैयार करना	32
31	मुजफ्फरनगर	मेड़ों पर खीरा की उर्द के साथ सहफसली खेती	33
32	पीलीभीत	सिरिंज द्वारा बूँद–बूँद सिंचाई की पद्धति	34
33	बागपत	लो–टनल पालीहाउस में कुकरविट की खेती	35
34	मुरादाबाद	मशरूम की कृषि तकनीक	36
35	बुलन्दशहर	आय बढ़ाने हेतु पुष्पों की खेती	37
36	सुल्तानपुर	अगेती फूलगोभी में पौध संख्या प्रबंधन	38
37	एटा	आम के बाग तथा सरसों की कृषि से दुगनी आय हेतु मधुमक्खी पालन	39
38	मिर्जापुर	कृषि कार्य में ट्रैक्टरचालित जेनरेटर से सिंचाई में लागत बचायें	40
39	गोण्डा	प्रक्षेत्र मशीनरी (फार्म मशीनरी बैक)	41
40	चित्रकूट	सघन कृषि मॉडल (2.5 एकड़)	42
41	इलाहाबाद	मधुमक्खी पालन एक अच्छा व्यवसाय	43
42	प्रतापगढ़	बेमौसम सब्जी उत्पादन	44
43	उन्नाव	केला के साथ पातगोभी तथा मशरूम की खेती	45
44	बरेली	ट्रेन्च ओपनर में आवश्यक परिवर्तन कर गन्ने की खेती अधिक लाभकारी	46
45	लखनऊ	अधिक मूल्यवान सब्जियों की खेती	47
46	गाजीपुर	सघन एवं औषधीय पौधों की जैविक खेती	48
47	भदोही	कालीन उद्योग हेतु अलसी के रेशे का उपयोग	49
48	देवरिया	प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धतानुसार औद्योगिक खेती प्रणाली लाभकारी	50
49	सीतापुर– I	ड्रिप सिंचाई में प्लास्टिक पलवार से गन्ने के साथ लहसुन–भिण्डी की खेती	51
50	कौशाम्बी	द्वारिका जैविक कृषि केन्द्र द्वारा वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन	52
51	औरैया	डेयरी द्वारा बायोगैस से संचालित पंप द्वारा फसल सिंचाई	53

प्रस्तावना

भारतीय कृषि विकास में कृषि का 50 वर्ष का इतिहास रहा है। प्राचीन काल से ही कृषि में नये–नये शोध हुए हैं तथा यह क्रम लम्बे समय से चला आ रहा है। पारम्परागत कृषि में आधुनिक कृषि की नवीनतम तकनीक का समावेश कर कृषि विस्तार को नई दिशा देने में सीख परक कृषक नवोन्मेषी, कृषि एवं तत्सम्बन्धी विभाग के विकास में एक महत्वपूर्ण कुंजी है। नवोन्मेषी द्वारा अधिक आय प्राप्त की जा रही है जिससे कम समय में प्रक्षेत्र की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सके। किसानों द्वारा अच्छी प्रजातियों का चयन अधिक उपज एवं गुणवत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जा रहा है, इसी कड़ी में कृषकों द्वारा बाजार आधारित, कम लागत, ग्रेडिंग, पैकिंग एवं प्रसंस्करण द्वारा, उत्पाद तैयार कर जीवन स्तर में सुधार के प्रति जागरूकता बढ़ी है, परन्तु इन सभी प्रयासों को समाज ने मान्यता नहीं दी है, जिसके वे वास्तव में पात्र हैं। नवोन्मेषी धरोहर को आलोचना ही मिली है, उनका उत्साहवर्धन नहीं हुआ है, जबकि उन्हें इस कार्य हेतु सम्मानित किया जाना चाहिए जिन्होंने कृषि को नई दिशा देने के लिए हट कर काम किया तथा उस तकनीक को संरक्षित कर आगे बढ़ाने का काम किया। टिकाऊ खेती में नवोन्मेषी प्रयास पारम्परागत खेती की तुलना में नवीन तकनीक से कृषि विकास को निश्चित ही गति देंगे।

प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रयोग स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयास से नवोन्मेषी सीख परख को किसी सीमा रेखा में नहीं बांधा जा सकता है। इस पारम्परिक ज्ञान को जमीन पर उतारना जिसमें वैज्ञानिक कृषि तकनीक का समावेश भी हो उच्च प्रबन्धन जो कि सामाजिक आर्थिक पहलुओं पर खरा उतरता हो जो समाज के जीवनस्तर मे सुधार लाए तथा ग्रामीण कृषि विकास स्थायी कृषि को निश्चित करके आगे ले जाने की दिशा में हो, इसे अन्य किसान सीख कर अनुकरण करें। इस विधा में न केवल फसलें बल्कि मृदा उर्वरता ह्रास, पशुधन, कीटरोग व्याधियां आदि पर प्रभावी रोक लगे, साथ ही वातावरणीय परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, बाजार संतुलन, कृषि नीति, अनुसंधान, आर्थिक वैश्वीयकरण का ध्यान रखते हुए कार्य किया जाये। जो नवोन्मेषी अपनाई जाये उसे भली–भाँति परीक्षण/शोध उपरान्त ही जमीन पर उतारी जाये तभी इस प्रकार की तकनीकी को प्रभावी, उपयोगी, उत्पादक, लाभकारी, अधिक समय तक, स्थायी, बाजार परख, सर्वांगनुकूल किया जा सकता है तभी गरीब किसान जो जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से जूझते हैं और उन्हे कृषि मे घाटा उठाना पड़ता है, वे भी कृषि मे आगे बढ़ने का अवसर उठा पायेंगे। लघु कृषक अनौपचारिक रूप से नए तरीके अपना कर प्रयोग करता है, उन्हें उत्साहित किया जाना चाहिए तथा प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग बाजार तथा प्रबन्धन आदि पर सहयोग की आवश्यकता है।

नवोन्मेषी अग्रणीय कृषकों हेतु निम्न बिन्दु विचारणीय हैं:

1. स्थानीय कृषि पद्धति मे विविधताः–

एक ही जनपद में कृषि पारिस्थितकी, जलवायु, आर्थिक स्थिति, सामाजिक ताना–बाना में बहुत अन्तर है, यह केवल मण्डल प्रदेश एवं देश में ही नहीं बल्कि जिलें, ताल्लुका तथा गांव स्तर पर भी है। प्रत्येक कृषि प्रणाली में खामियां, अच्छाईयां एवं चुनौतियां तथा सम्भावनाएं है, इन सब के बीच स्थानीय स्तर पर कृषक अनुकूल प्रजाति हैं, उनके अनुरूप कौन सा नवोन्मेषी ठीक होगा, चुनते हैं, अपनाते हैं जो उनके लिए अनुकूल होता है, वहाँ वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी को पहुँचाना लाभकारी नहीं होता है बल्कि उनके अनुसार आवश्यकता मांग आधारित तथा ए.ई.एस. के अनुसार सटीक तकनीक दी जाये जो उन्हें लाभकारी हो। इसी के अनुरूप शोध एवं विकास परक कृषि रणनीति बनाने की आवश्यकता है। स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप जो तकनीक सटीक हो उसी की अनुशंसा की जाये। ऐसी तकनीक जो अनुकूल न हो अनावश्यक शोध प्रसार पर समय एवं धन की बर्बादी से बचा जाना चाहिए।

2. स्थानीय क्षमता को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक परिवर्तन ज्ञात किया जाये जिसे वह ग्राह्य कर सकेः–

कोई नवोन्मेषी स्थायी नहीं होती अनुकूल न होने पर तुरंत बदलाव किया जाना श्रेष्ठकर होता है क्योंकि जोखिम से बचना, किसी नये कीट या बीमारी, जलवायु परिवर्तन आदि से होने वाले नुकसान को रोकने में किसान की सहायता हो जिससे उनका विश्वास बहाल हो एवं नवोन्मेषी विधाओं को

ग्राह करने में उनका विश्वास बना रहे। यद्यपि किसान विपरीत हालात के प्रति सचेत रहते हैं परन्तु ऐसी परिस्थिति का सामना करने की उनकी क्षमता कम होती है, क्योकि उनके सामने कृषि मे अनेक चुनौतियाँ हैं।

किसानों के परिपेक्ष्य में:–

1. बाहरी लोगों पर सकारात्मक नजरिये की कमी– प्रसार संगठनों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं द्वारा कृषकों को जो जानकारी दी जाती है उन्हें कृषकों द्वारा अपनाने में दुविधा रहती है क्योंकि स्थानीय भाषा या उन्हीं की भाषा में जानकारी न देने के कारण उन्हें विश्वास नहीं होता है। संसाधनों की कमी वाले किसान अशिक्षित एवं बात को टालने वाले होते हैं, जिन्हें समझाना चुनौतीपूर्ण है, परन्तु जानकार एवं प्रशिक्षित कृषक तकनीकी को अपनाकर उसको बेहतर समझ सकते हैं। बाहरी शोधकर्ता प्रसार संगठन अपनी तथ्यात्मक बात न रख पाने के कारण असफल हो जाते हैं। अतः सभी नवोन्मेषी अन्य किसानों तक पहुँचाने मे सार्थक नहीं हो पाते और अभीष्ट लक्ष्य मे रूकावट आती है।

2. कृषकों द्वारा शोध संस्तुतियाँ, प्राथमिकताएँ अपनाने में अवसरों की कमी– कृषकों की कृषि प्रणाली में नीतिगत निर्णयों में भागीदारी न के बराबर है। कृषकों की प्राथमिकता, आवश्यकता, शोध संस्तुतियाँ, प्रशिक्षण में कृषि प्रबन्धन आदि में उनकी भागीदारी, मिलना–जुलना, रूचि, आदान–प्रदान संसाधन के उपयोग का पूरा फायदा किसान नहीं ले पा रहे है। इस दिशा में शोधकर्ताओं द्वारा शोध परिणाम क्षेत्र विशेष हेतु निश्चित करने होंगे जो धरातल पर उतारे जा सके जो किसानो द्वारा अग्रीकृत किए जा सके। उन्नत तकनीक कमजोर कृषकों द्वारा आसानी से अपनाई जा सके तथा उसमें नई विधा को वे आगे अपनाकर नयापन ला सकें।

3. आर्थिक मदद की कमी– कृषकों द्वारा कृषि में नवीन नवोन्मेषी के प्रति अत्यन्त रूचि है। वे नया करना चाहते हैं पर धनाभाव के कारण उन्हें अनेक बाधाएं आती हैं तथा नये नवोन्मेषी प्रयोग में जोखिम उठाने मे वे सक्षम नहीं हैं क्योंकि एक बार जोखिम उठाने के बाद वे मिशन मे टूट जाते हैं। कृषक नवोन्मेषी अपनाने में वित्तीय मदद मिलने से वे उत्साह से आगे बढ़ते हैं तथा विधा विकसित करने में मदद मिलती है। स्थानीय पद्धति की तुलनायें अधिक लाभ मिलने पर रूचि बढ़ती है। पराम्परागत तरीकों में कृषक शासन से सुविधाओं जिसमे वित्तीय अथवा अन्य निवेश की अधिक अपेक्षा नहीं होती है, शासन से जो वित्तीय मदद मिलती है, उन्हें जो तकनीकी दी जाती है उसी मानक के अनुरूप प्रयोग किया जाता है। दिये गये ज्ञान एवं तकनीक पर ही वह निर्भर रहते हैं ऐसे में नयापन नहीं आने पाता और किसान निराश हो जाता है क्योंकि पूर्ण रूप से एजेन्सी द्वारा नियंत्रित कार्यक्रम रहता है। शासन द्वारा धन शोध मानकों के अनुरूप दिया जाता है। अतः छोटी जोत वाले किसान नहीं जुड़ पाते।

4. गरीब किसान की मदद मे कमी– अनेक नवोन्मेषी कृषक यह मानते हैं कि कृषि में नवोन्मेषी अपनाना आसान नहीं है। कृषक समुदाय एवं अन्य साथी कृषक यह समझते हैं कि नवोन्मेषी से उनका जीवनस्तर में अन्तर आयेगा परन्तु अधिकांश कृषकों की यह पृवत्ति है कि क्षेत्रीय प्रसार कार्यकर्ताओं द्वारा नई तकनीकी बताई जाती है। अधिकतर किसान भरोसा करते हैं कि उन्हे आवश्यक जानकारी मिल रही है क्योंकि अनेकों लोगों को मदद न मिलने से वह नवोन्मेषी कृषकों को हतोत्साहित करते हैं तथा वह कहते हैं कि उनका समय बर्बाद किया जा रहा है, इस तकनीक से कुछ मिलने वाला नहीं है।

5. अशिक्षा– कृषकों के लिए अशिक्षा भी नई तकनीक अपनाने की एक चुनौती है क्योंकि नवोन्मेषी तकनीक में तकनीक का ज्ञान होना आवश्यक है जो अशिक्षा के कारण सही प्रयोग नहीं हो पाता है और नवोन्मेषी की सफलता के सही परिणाम नहीं मिल पाते हैं एवं तकनीक में खामियां होने से विस्तार मे रूकावट आती है।

शोधकर्ताओं के परिपेक्ष्य में:–

1. कुछ शोधकर्ता नवोन्मेषी कृषकों के साथ काम करने में रूचि रखते हैं तथा सहभागिता के साथ उनका सहयोग लेकर अच्छे परिणाम हेतु आंकड़े लेते हैं एवं पराम्परागत ढंग से सांख्यिकी विधि को अपनाकर विश्लेषण करते हैं साथ ही किसानों के बीच संवाद कर सहभागिता से परिणाम की जानकारी से विश्वास पैदा करते हैं।

2. कई शोधकर्ता नवोन्मेषी कृषकों से वास्तविक पृष्ठभूमि को साझा नहीं कर पाते हैं जिससे नवोन्मेषी कृषकों में

तकनीकी के प्रति विश्वास नहीं हो पाता और वे नवोन्मेषी के प्रति प्रेरित नहीं होते हैं साथ ही उस तकनीक के परिणाम अंगीकृत न होने से तकनीकी आगे नहीं बढ़ पाती न ही उस अन्वेषण को मान्यता मिल पाती है।

3. कुछ शोधकर्ता सहभागी कृषि अन्वेषण विकास में उसके तरीकों, तकनीकियों बारीकियों को आवश्यक दिशा–निर्देशों के अनुरूप नहीं पाते जिससे कृषक सहभागियों में रूचि नहीं लेते शोधकर्ता संस्तुत तकनीकी एवं नवोन्मेषी मे अन्तर पाते हैं इसमें अनावश्यक बात यह है कि वास्तविक शोध एव नवोन्मेषी विधा मे अधिक अन्तर आने से अपेक्षित परिणाम उनके निष्कर्ष में समानता नहीं दिखती। परिणाम स्वरूप कृषक नवोन्मेषी के आंकड़े संस्तुतियों एवं निष्कर्ष वास्तविक शोध के अर्थों मे उपयोग मे नहीं आ पाते।

4. कुछ समय तक शोधकर्ता संशय की स्थिति में रहते हुए कृषक नवोन्मेषी में काम करने में असुविधा महसूस करते हैं यह अलग अनुभव एव कठिनाईयों के समाधान न होने का कारण बनता है।

5. कृषक नवोन्मेषी का चिन्हीकरण करना वैज्ञानिकों के लिए आसान काम नही हैं। इसे सुगम बनाने के लिए पारम्परिक सर्वे के तौर इस्तेमाल में लाने चाहिए तथा इसके लिए समय, धैर्य, वचन बद्धता एवं निरन्तरता की आवश्यकता है। कभी–कभी वातावरण अनुकूल न होना तथा कभी अन्य अनुभवी शोधकर्ता का सहयोग लेना पड़ता है जिससे सर्वे आदि से सही बात निकल कर आगे शोधकर्ताओं के लिये आसान क्षेत्र का चयन भी मददगार साबित होता है, परन्तु कृषक अन्वेषण के साथ ताल–मेल बढ़ाने से शोधकर्ता असहज रह जाते हैं। ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में उन परिणामों को प्रकाशित कराने में कम समय में अपनी ऊर्जा नहीं लगाते हैं।

नवोन्मेषी में तरीको की उपयोगिताः–

प्रदेश के 50 जनपदों के कृषक नवोन्मेषों को चिन्हित कर कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से जमीनी स्तर पर खोज निकाले गये जो विभिन्न कृषक नवोन्मेषी जिन्होंने कृषि तकनीकी का प्रयोग विशिष्ट प्रकार से अपनाया। कृषकों का अभिनव प्रयोग दक्षता के साथ एवं फसल पद्धति को सुनियोजित तरीके से अपनाया जिससे उन्हें बेहतर लाभ मिला उस तकनीक को अन्य लोगों ने स्वीकार किया इस प्रकार प्रदेश में कुल 190 कृषकनवोन्मेषी चिन्हित किये गये। अगले चरण मे कृषक नवोन्मेषी को चिन्हित कर उनकी तकनीक को परक कर मूल्यांकन पश्चात विशुद्ध मानकों को दृष्टिगत रखते हुए श्रेणीबद्ध किये जाएंगे इस प्रकार सम्पूर्ण दस्तावेज/अभिलेख सफल अनुभवों पर आधारित एक अभिलेख प्रकाशित कर अन्य कृषकों तक प्रदेश मे ले जाने का प्रयास है।

बहराइच

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	मेड़ों पर तरबूज की उत्पादन तकनीक
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	गुलाम मोहम्मद ग्राम– जरवल देहात जरवल जिला, बहराइच उ.प्र. 271801 मो० 9839850134 उम्रः 50 वर्ष शिक्षा – मिडिल पास कृषिजोत – 9.5 एकड़ अनुभव– 22 वर्ष
4.	समस्या / चुनौती	:	ए.ई.एस. 4 / 5 बलुई दोमट भूमि में कृषि कम लाभकारी।
5.	नवोन्मेषी तकनीक का विवरण	:	आलू की खुदाई के बाद मेड़ों पर तरबूज / खरबूजा की रोपाई पालीथीन सीट से कवर किया गया (नमी रोकने हेतु पलवार के रूप में)
6.	प्रयोगात्मक उपयोगिता	:	केला, आलू के खेती के बीच नकदी फसल के रूप में तरबूज / खरबूजा की फसल लेना
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र का सम्पर्क कृषक के रूप में तकनीकी को केन्द्र द्वारा पहुँचाना।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	कृषक पद्धति वीसी अनुपात 1.35 नवोन्मेषी तकनीकी–वीसीअनुपात 2.85 इससे स्पष्ट है की परंपरागत विधि की तुलना में लगभग २ गुना से अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है ।
9.	उपयोगता	:	ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों मे विस्तारकों की संख्या में वृद्धि जनपद मे परम्परागत कृषकों की तुलना में नवोन्मेषी तकनीकी अधिक लाभकारी।
10.	आधार संख्या	:	3599 7882 8241

कार्यक्रम समन्वयक द्वारा किसान क्षेत्र का भ्रमण

उठी मेड पर कस्तूरी तरबूज का उत्पादन

बस्ती

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	कम्बाइन मशीन (मड़ाई यंत्र), साथ में भूंसा मड़ाई यंत्र की नवोन्मेषी
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि यंत्र की कृषि उत्पादन में उपयोगिता
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री आज्ञाराम वर्मा पुत्र श्री भगवती प्रसाद ग्राम – खरिका देवरी (पिपरहिया) पोस्ट – कोदई शिक्षा – इन्टरमीडिएट मो० 7398349644 उम्र – 51 वर्ष जोत – 2 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	पारिश्रमिक दरों में बढ़ोत्तरी / श्रमिकों की कमी
5.	नवोन्मेषी तकनीक का विवरण	:	लघुकृषकों / लघुजोत के कृषकों को समय पर कटाई–मड़ाई सुगम एवं श्रमिकों की कमी का विकल्प
6.	प्रयोगात्मक उपयोगिता	:	नवोन्मेषी छोटी कम्बाइन से मड़ाई–कटाई में समय श्रम धन की बचत तथा गेहूँ भूंसा भी सुरक्षित जिससे डेयरी उद्योग को बढ़ावा।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र, बस्ती
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	लघु कम्बाइन मड़ाई मशीन से प्रति हेक्टेयर व्यय रू. 10000.00 है तथा श्रमिकों द्वारा यह व्यय रु. 15000.00 है। फसलों की समय पर मड़ाई, वर्षा के जोखिम से बचाव, कम व्यय वी.सी. अनुपात 2.5
9.	उपयोगता	:	ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या में वृद्धि कृषकों मे ग्राहता तेजी से बढ़ी। जनपद में 276 हेक्टेयर क्षेत्र 823 किसान लाभान्वित हुए एवं तकनीकी का विस्तार हो रहा है।
10.	आधार संख्या	:	8454 4673 0598

कम्बाइन मशीन का प्रदर्शन (भूंसा बनाते हुए)

बलिया

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	मचान / पलवार पद्धति से लौकी की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री हरीराम चौरसिया ग्राम – मनियार, ब्लाक – सिकन्दरपुर, जिला – बलिया मो० 8737080769 उम्र – 50 वर्ष शिक्षा – इन्टरमीडिएट जोत – 2.5 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	लौकी की गुणवत्ता तथा कम उत्पादन
5.	नवोन्मेषी तकनीक का विवरण	:	मचान / पलवार पद्धति से लौकी की खेती
6.	प्रयोगात्मक उपयोगिता	:	अच्छी गुणवत्ता, आकर्षक फल, श्रेष्ठ आकार तथा अधिक मूल्य प्राप्त होना
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	उक्त तकनीक से 33 प्रतिशत उत्पादकता में वृद्धि मचान विधि से लगभग तीन गुना आय में वृद्धि प्राप्त की गयी।
9.	उपयोगता	:	ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों मे विस्तारकों की संख्या:15 कृषकों द्वारा तकनीकी की ग्राहता तथा 10 कृषक तकनीकी से प्रेरित
10.	आधार संख्या	:	6256 3406 5746

मचान विधि से लौकी की खेती का प्रशिक्षण

लौकी की खेती

मऊ

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	सूखा मौसम की स्थिति मे अरहर की पौध तैयार कर रोपण
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि सस्य विज्ञान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री आशीष राय ग्राम – चेलाराम का पुरवा पोस्ट – कोपागंज, जिला– मऊ, उत्तर प्रदेश मो० 9473768023 शिक्षा – स्नातक जोत – 2 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	सूखे की स्थिति में फसल को नुकसान एवं कम उत्पादन
5.	नवोन्मेषी तकनीक का विवरण	:	एक माह की अरहर की पौध जिसे पालीथीन थैली मिट्टी के कुल्हण में तैयार कर जुलाई मे खेत में रोपाई की जाती है। इस स्थिति में पौध में बेहतर बढ़त होती है।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	25–30 दिन की पौध उचित दूरी पर रोपण करने से 2.5 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की पैदावार सूखा की स्थिति में तथा सामान्य स्थिति पारम्परिक विधि की तुलना में 8–10 कुन्तल प्रति हेक्टेयर पैदावार में वृद्धि पाई गई।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके मऊ / स्वःप्रेरित
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	उपज में 15 प्रतिशत की वृद्धि, फसल सुरक्षित गम्भीर सूखा की स्थिति में फसल से अच्छी पैदावार प्राप्त हुयी। इस क्षेत्र में दालों का उत्पादन चुनोती भरा रहा है, इस तकनीक से दालों की उत्पादन संभावनाएं बढ़ी है। लगभग ४०–५० हजार प्रति हेक्टेयर लाभ प्राप्त किया गया।
9.	उपयोगता	:	ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या:50, 15–20 हेक्टेयर क्षेत्रफल में दलहन का विस्तार सूखाग्रस्त वर्ष में दलहन उत्पादन की अधिक सम्भावनाएं।
10.	आधार संख्या	:	अपर्याप्त

अरहर नर्सरी उगाने की तकनीक

अरहर नर्सरी छोटे प्लास्टिक कप में

सिद्धार्थनगर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	सिंचाई करने वाले इंजन में बदलाव में सिंचन क्षमता बढ़ाना एवं सिंचाई में लागत कम।
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि अभियांत्रिकी
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री सत्यानंद सिंह पुत्र स्व० भुवनेश्वरी सिंह मो० 9161414408 उम्र – 42 वर्ष शिक्षा – स्नातक जोत – 30 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	सिंचाई समस्या का निदान एवं लागत में कमी
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण:		सेन्ट्रीफ्यूगल पंप में परिवर्तन 6.6 साइज आपरेटर ट्रैक्टर पी.टी.ओ. साफ्ट द्वारा डिलीवरी पाइप को सिंगल डिलीवरी पाइप में 3 कट आउट प्लेट पानी के दबाव को कम करके तीन हिस्सों में बाँटकर सिंचाई क्षमता बढ़ी तथा लागत कम उपादेयता बढ़ाई।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	इस तकनीक से पानी उठाने की क्षमता में वृद्धि सिंचाई की लागत में कमी तथा सिंचाई में समय की बचत। 1 एकड़ की सिंचाई में सामान्य पद्धति से सिंचाई करने से 7 लीटर डीजल की बचत जिसमें 450 रू. खर्च आता है जबकि सामान्य पद्धति में ज्यादा लागत आती है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	स्वयं प्रेरित
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	परिवर्तित पम्पिग सेट लागत / एकड़ रू० 200 सामान्य पम्प से लागत 900 रू० / एकड़ लाभ 700 रू० / एकड़ वी.सी. अनुपात 3.5
9.	उपयोगता	:	ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या : 7 कृषकों द्वारा तकनीक की ग्राहता का प्रसार।
10.	आधार संख्या	:	8366 6412 0045

श्रीमान सत्यनंद सिंह उनके संशोधित केन्द्रापसारक पंप के साथ

महाराजगंज

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	टिशू कल्चर केला रोपण का विस्तार
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री जनार्दन प्रसाद यादव ग्राम–खेसरारी, टोला मजहा चापरा पोस्ट–सिसवाबाजार, जिला–महाराजगंज मो० 9450427515 शिक्षा–इन्टरमीडिएट जोत–10 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	उत्तर पूर्व प्लेन जोन की केला उत्पादन समस्या का समाधान (डबल लाइन)
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	तकनीकी– टिशू कल्चर में सामान्य पौधे समान फल अच्छी पैदावार तथा व्यापारी खेत से सीधे क्रय करते हैं बाजार की समस्या का समाधान। मन्डी समस्या से निजात, अच्छी कीमत एवं बिक्री में समस्या नहीं। केला की खेती नकदी फसल है जिससे किसानों में रूचि बढ़ी एवं सामाजिक स्वीकारिता बढ़ी स्थानीय किस्मों की तुलना में अधिक लाभ
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	आम, अमरूद एवं आंवला के बीच टिशू कल्चर केला, जनपद मे पारम्परागत केला की तुलना मे सफल है। प्रजाति जी. 1 तथा 2×2 मीटर से एक हेक्टेयर मे 2500 पौधे रोपित होते हैं। इससे व्यवासायिक रूप मे खेती हो रही है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीक बसौली, महाराजगंज (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	1 हेक्टेयर मे लागत 1.91 लाख तथा कुल लाभ रु. 9.3 लाख / है., वी.सी. अनुपात 4.86
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	दृश्य दर्शन तथा मीडिया द्वारा विस्तार
10.	आधार संख्या	:	5141 8177 2734

टिशूकल्चर से रोपित केला फसल के साथ किसानों का समूह

सोनभद्र

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	हल्दी एवं सूरन की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान / कृषि विविधीकरण
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री बृम्हदेव प्रसाद कुशवाहा ग्राम एवं पोस्ट–भरसादा, ब्लाक–गोरावल जिला–सोनभद्र मो० 9451583278 उम्र–52 वर्ष शिक्षा–स्नातक जोत–4 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	वर्ष भर आय अर्जन कर अधिक लाभ प्राप्त करना
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री कुशवाहा जी कृषि की विविधीकरण मे रूचि रखते हैं। वर्ष मे प्रायः धान, गेहूँ, मसूर, चना, हल्दी, सूरन उगाते हैं, परन्तु उन्होंने कृषि विविधीकरण को वरीयता दी।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	फसल पद्धति में कृषि विविधीकरण आज की आवश्यकता है, विशेषकर छोटे कृषकों तथा बड़े पैमाने पर कृषि प्रणाली मे इससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि तथा आय सृजन में मदद मिलती है। मृदा उर्वरता तथा भूमिक्षरण की स्थिति में सुधार एवं कृषि विविधता को बढ़ावा मिलता है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीक सोनभद्र (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	तकनीकी रूप से मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा शुद्ध आय में बढ़ोत्तरी, एक एकड़ में हल्दी एवं सुरन से ३.५० लाख का शुद्ध लाभ प्रसंस्करण द्वारा हल्दी का पावडर तैयार कर बेचा गया। सूरन २०–२५ रू प्रति किलो के दर से ०.५ एकड़ में १०० कुं . पैदावार प्राप्त हुई। २००१ में ७००० रु से कृषि कार्य प्रारंभ किया। वर्तमान में १६ बीघा जमीन खरीदी एवं २ करोड़ की संपत्ति तैयार की। सामाजिक – किसान के जीवन स्तर में सुधार आर्थिक – आर्थिक स्थिति मे सुधार
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	कृषकों द्वारा आसान ग्राह्यता, 2400 कृषकों तक तकनीकी का विस्तार
10.	आधार संख्या	:	8459 9347 6531

हल्दी की खेती का अवलोकन करते कृषक

सूरन की खेती का अवलोकन करते कृषक

आजमगढ़

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	नाली में गन्ने की खेती के साथ सब्जी मटर की खेती से सघनीकरण
2.	विषय क्षेत्र	:	समन्वित फसल प्रबन्धन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री मारकन्डे सिंह पुत्र श्री नरसिंह बहादुर सिंह ग्राम – सिकरौर समरी, ब्लाक – भारतीगंज जिला– आजमगढ़ (उ.प्र.) मो० 9918424249 उम्र – 60 वर्ष शिक्षा – स्नातक जोत – 10 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	पारम्परागत गन्ने की खेती, कम आय, कम उत्पादन के साथ समय एवं भूमि के उपयोग का सही इस्तेमाल न होना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री सिंह के पास व्यवासायिक कृषि के लिए काफी भूमि उपलब्ध है, उन्होंने 2011 में नाली में गन्ने की खेती की शुरूआत की। COS 1148 प्रजाति 45×45×25 की दूरी पर नालियों में गन्ना तथा मेड़ों पर दो लाइने सब्जी मटर की बुवाई की सभी निवेश मुख्य फसल में देते हुए बुवाई पूर्व खरपतवार नाशी का प्रयोग किया।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	लम्बे समय तक रोजगार के अवसर बढ़े दलहनी फसल के समावेश से मृदा स्वास्थ्य, सुधार लागत में कमी तथा हरी मटर फली की अतिरिक्त 80.7 कुन्तल पैदावार प्राप्त हुई।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके आजमगढ़ (उ.प्र.) तथा गन्ना अनुसंधान केन्द्र, कुशीनगर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	पराम्परागत गन्ना से 132000 रू. प्रति हेक्टेयर तथा इस विधि से 263000 रू. प्रति हेक्टेयर तथा साथ ही मटर से अतिरिक्त आय 97300 रू. प्रति हेक्टेयर। लागत आय अनुपात 4.17
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	140 हेक्टेयर क्षेत्र विस्तार नाली विधि से हुआ। विस्तार की प्रबल सम्भावनाएं पारम्परागत फसलों की तुलना में बेहतर विकल्प।
10.	आधार संख्या	:	3885 0452 1445

हल्दी की खेती का अवलोकन करते कृषक

सूरन की खेती का अवलोकन करते कृषक

बलरामपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	बकरीपालन मे सामाजिक / आर्थिक परिवर्तन कर वैज्ञानिक विधि से बकरीपालन
2.	विषय क्षेत्र	:	बकरीपालन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	मोहम्मद असलम ग्राम – बसन्तपुर मदहाना, पंचपेरवा, जिला – बलरामपुर उम्र – 53 वर्ष, शिक्षा– स्नातक, जोत – 6.5 हेक्टेयर अनुभव – 23 वर्ष फसल– धान, गेहूं, चना, मटर, मसूर, तोरिया फसल चक्र – कृषि + बकरीपालन+ उद्यान 15 बकरे, 53 बकरी,सामाजिक पहचान– बकरी मास्टर मो० 9651740155
4.	समस्या / चुनौती	:	पिता के निधन के बाद परामपरागत रूप से खेती से आय कम
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	5 बकरी एवं 1 बकरे की पुरानी नस्ल से बकरीपालन प्रारम्भ कर प्रथम बार 1500 रू. कमाये। उन्होने केवीके की सलाह पर प्रशिक्षण प्राप्त कर बरबरी नस्ल को दुग्ध एवं मांस दोनो ही उद्देश्य से सफल है का चयन कर वैज्ञानिक बिधि में बकरी पालन प्रांरभ किया। कम खुराक एवं प्रबन्धन से अधिक लाभ 1.5 ली. प्रति दिन दुग्ध देती है। आज 15 बकरे एवं 53 बकरी के साथ धान, गेहूँ, मटर, चना तथा मसूर तथा आम का बाग आदि समुचित देख–भाल से अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	बकरीपालन बरबरी नस्ल उपयोगी, कम प्रबन्धन, अधिक लाभ तथा समूह मे बकरीपालन को उत्साहित करती है जिससे परिवार की शुद्ध आय मे बढ़ोत्तरी एवं आयश्रजन के दरवाजे खोलती है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	तकनीकी ज्ञान केवीके द्वारा तथा स्वःप्रेरणा से
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	90000 रू. प्रति वर्ष आय सृजन लागत 20000 / प्रतिवर्ष वी.सी. अनुपात 4:3
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	21 प्रतिशत परिवार पास के गांव के लोग इसे अपना रहे हैं, इसे शासकीय अधिकारी एन.जी. ओ. प्रसार कार्यकर्ता वैज्ञानिक आदि अवलोकन कर चुके हैं तथा हौसलाअफजाई की।
10.	आधार संख्या	:	7975 1897 8528

बकरी के बच्चों के साथ किसान तथा वैज्ञानिक

बरबरी बकरी झुंड का दृश्य

चन्दौली

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	मेड़ों पर अरहर की खेती की तकनीक
2.	विषय क्षेत्र	:	संसाधनों की संरक्षण तकनीकी
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री शिवा सिंह जी पुत्र सोमनाथ सिंह ग्राम व पोस्ट रामगढ़, ब्लाक एवं जिला– चन्दौली मो० 9838528576 उम्र– 55 वर्ष, शिक्षा– इन्टरमीडिएट, जोत– 2.5 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	जलभरावग्रस्त ए.ई.एस. क्षेत्र में अरहर से कम पैदावार होना तथा कम आय की प्राप्ति (पारम्परिक खेती)
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	पंक्ति से 70×30 सेमी. दूरी पर उठी हुई मेड़ों पर अरहर की खेती की तकनीक
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	मेड़ों पर अरहर की खेती से उपज अधिक होती है। लागत कम तथा निवेशों का बेहतर इस्तेमाल होता है। पारम्परिक विधि से की गई खेती की तुलना में अच्छा लाभ देती है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके चन्दौली (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	इस तकनीक से अरहर की 11.50 प्रतिशत उपज वृद्धि प्राप्त तथा 12.60 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज के साथ 40320 रू. आय़ लागत आय अनुपात 3.39 अधिक वर्षा या कम वर्षा की स्थिति में अरहर की पैदावार सुनिश्चित।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	कृषक सहजता से तकनीकी ग्राह्य कर रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	7720 6953 2681

उठी हुई मेड़ों पर अरहर की बुआई

मेड़ों पर अरहर की खेती के लिये 70 सेमी × 30 सेमी तक लाइन की बुवाई

जौनपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	फसलों के साथ संरक्षित औधानिक फसलों की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राम जौन मौर्य ग्राम– मझौली, जिला – जौनपुर मो० 9451710571 उम्र – 45 वर्ष भूमि – 5 हेक्टेयर शिक्षा– स्नातक
4.	समस्या / चुनौती	:	प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने के साथ रसायनिक खादों आदि के इस्तेमाल के साथ प्राकृतिक खादें खेती में लागत कम करती हैं। इससे मृदा स्वास्थ्य ठीक रहता है जिससे नमी संरक्षण एवं जीवांश बढ़ता है भूमि कटाव रूकता है, इसे संरक्षित किया जाना है।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	लो–टनल पालीहाउस में सब्जी पौध तैयार कर मुख्य फसलों के साथ उगाना (एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन एवं एकीकृत कीटनाशी प्रबन्धन के साथ)
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	कीटनाशी नाइट्रोजन फास्फोरस, जीवांश एवं सिंचाई के बेहतर प्रबन्धन से भूमि का उर्वरा स्तर बढ़ा तथा शुद्ध लाभ एवं पैदावार में वृद्धि पाई गई।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके जौनपुर (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	इस तकनीक से कुल लागत 237000 रू. प्रति वर्ष कुल आय 438150 रू. प्राप्त की।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	वर्तमान में जनपद में तकनीकी विस्तार से 22 नर्सरी काम कर रही हैं तथा अच्छी आय प्राप्त कर रही हैं। फलदार पौधे एवं सब्जी से अच्छी आय प्राप्त हो रही है।
10.	आधार संख्या	:	6433 0945 8847

ओकरा की खेती

रोपण के द्वारा तैयार की गई मिर्च की स्वस्थ फसल

झाँसी

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	कृषि के साथ व्यवसायिक डेयरी उत्पादन
2.	विषय क्षेत्र	:	पशुपालन आधारित कृषि
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री हरगोविन्द ग्राम एवं पोस्ट–ओजला, जनपद–झाँसी मो० 9956545054 उम्र–51 वर्ष, शिक्षा–हाईस्कूल जोत–8 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	1. हरे चारे की अनिश्चितता 2. भैंसों में गर्भाधान की समस्या 3. देशी नस्लों से उत्पादन कम 4. कृत्रिम गर्भाधान का आच्छादन कम 5. सन्तुलित आहार एवं वैज्ञानिक पशुपालन के ज्ञान में कमी
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री हरगोविन्द जी को धान, दलहन, तिलहन, सब्जी आदि उत्पादन में महारथ हासिल है, साथ ही डेरी का अच्छा प्रबन्धन करते हैं तथा यह कार्य वे 2009–10 से कर रहे हैं और यह कार्य केवीके से जानकारी लेकर करते हैं। वे उन्नत तकनीकों की खेती के साथ पशुपालन करते है। शासन से कामधेनु योजना के अन्तर्गत डेरी स्थापित की । 22 डेरी अपने गाँव ओजला में स्थापित करने में सहयोग दिया, जिसमे 1200 मानव श्रमदिवस का सृजन कराया, इसके साथ ही कई परिवार लाभान्वित हुए। वह चन्द्रशेखर समिति में अध्यक्ष भी हैं।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	फसलों में यदि नुकसान भी होता है तो उसकी भरपाई डेरी से हो जाती है। झाँसी शहर के नजदीक होने से उन्हे बाजार की सुविधा भी है। प्रति इकाई क्षेत्रफल अधिक मुनाफा ले रहे हैं।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके झाँसी (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	खरीफ मौसम में 18000 रू. तथा रबी मौसम में 310000 तथा डेयरी से 360584 रू., कुल मिलाकर 596084 रू. लाभ प्रति वर्ष कमा रहे हैं।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	ग्राम मे 100 कृषकों का एक समूह बनाया जिनका वह नेतृत्व करते हैं, उन पर सभी का विश्वास है एवं वे तकनीकी ज्ञान सभी तक पहुँचाते है तथा प्रति हेक्टेयर 1.5–2.00 लाख रू. सभी को पहुँचा रहे हैं, जिसमे डेरी एवं फसलों की आय शामिल है।
10.	आधार संख्या	:	3658 9339 1205

श्री हरगोविंद अपनी डेयरी इकाई के साथ

फसल उत्पादन गेहूं की फसल का क्षेत्र दृश्य

रायबरेली

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	एकीकृत कृषि प्रणाली
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राम वर्मा ग्राम–पूरे निकानी, पोस्ट–डिडौली ब्लाक–अमावन, जिला–रायबरेली–229001 मो० 7839023940 जोत–५ एकड़ शिक्षा – इन्टरमीडिएट
4.	समस्या / चुनौती	:	पारम्परिक विधि से खेती के बाद कम आय प्राप्त हुई, जिससे जीवन स्तर, परिवार के भरण–पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि जिम्मेदारियों का निर्वहन बड़ी ही कठिनाई युक्त रहा।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	1.पंक्ति मे सीड ड्रिल से गेहूँ की बुवाई 2.वर्मी कम्पोस्ट नेडप स्थापित कर जैविक खाद बनाकर प्रयोग करना। 3.बीज उत्पादन कर बिक्री से आय 4.गन्ना के साथ राई तथा दलहन की सहफसली खेती 5.सब्जी उत्पादन एवं मसाला उत्पादन से मुनाफा
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	सफल किसान के रूप मे द्वितीय पुरस्कार प्राप्त (प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा) एवं वर्ष भर आय स्त्रोतों का सृजन किया। पशुपालन से प्राप्त गोबर खाद से मृदा उर्वरता बढ़ी। साथ ही अधिक आय से जीवनस्तर मे सुधार एवं समाज मे प्रतिष्ठा बढ़ी।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके रायबरेली (उ.प्र.)
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी. अनुपात 2:4 विविधिकरण के सभी घटकों से कुल लागत १.८६ लाख रु. कुल आय ५.४४ लाख शुद्ध लाभ रु. ३.५७ लाख।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	एकीकृत कृषि प्रणाली से पूरे वर्ष आय नियमित मिल रही है जिससे जीवन स्तर मे सुधार हो रहा है। शिक्षा स्वास्थ्य सेवा आदि कठिनाई से मुक्त।
10.	आधार संख्या	:	7364 8573 5810

पैडी क्रॉप – डीएचएच 775 कृषक के द्वारा बोई गयी धान की फसल

गन्ने की फसल का एक दृश्य

लाइनों में गेहूं की बुआई

कन्नौज

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	आलू के साथ कद्दू की सहफसली खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	सहफसली खेती
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री दिवाकर प्रताप सिंह पुत्र श्री भरत सिंह ग्राम–रोतामई, पोस्ट–सराय प्रयाग, जिला–कन्नौज मो० 9451182055 उम्र–60 वर्ष शिक्षा–इन्टरमीडिएट, जोत–4 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	आलू की खेती से कम आय प्राप्त होना, कभी कम उत्पादन तो कभी भाव ठीक से न मिल पाना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री सिंह गत 12 वर्ष से आलू की खेती कर रहे हैं। आलू के साथ कद्दू की सहफसली खेती आलू की बुवाई के 3–4 दिन बाद 90–100 सेमी की दूरी पर 5वीं एवं 7वीं लाइन आलू की मेड़ों पर बुवाई। फरवरी में खुदाई के पश्चात कद्दू की विशेष देख–भाल से 15 अप्रेल से मई अन्त तक कद्दू से अतिरिक्त आय मिलने से अत्यधिक लाभ
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	एकल आलू की खेती की तुलना में कद्दू के साथ सहफसली खेती से उल्लेखनीय लाभ मिल रहा। लागत मे कोई अन्तर नहीं।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	स्वप्रेरित एवं केवीके के द्वारा बताई तकनीक से।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	2017–18 मे दोनो फसलों से कुल प्रति हेक्टेयर 167752 रू. का लाभ तथा लागत 112500 रू.
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	उपरोक्त पद्धति से वर्तमान में 250 हेक्टेयर है क्षेत्रफल में विस्तार हुआ तथा 625 किसान अपना रहे हैं। तालग्राम छिबरामऊ विकास खण्ड में लोकप्रिय फलों का बाजार सीधे हरियाणा, पूर्वी पंजाब, मध्यप्रदेश में उपलब्ध है जहां अच्छे दाम मिल जाते हैं।
10.	आधार संख्या	:	

आलू के साथ कद्दू की सहफसली खेती

आलू + कद्दू

इटावा

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	गेहूँ प्रजाति ए–1 एवं धान की प्रजाति महाक्रान्ति का सफल प्रयोग
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री रनवीर सिंह ग्राम–टकीपुरा, पोस्ट–मुंज, इटावा उम्र–65 वर्ष, शिक्षा–हाईस्कूल जोत–4 एकड़, मो० 9758034328, 8433125343
4.	समस्या / चुनौती	:	जलभराव एवं ऊसरग्रस्त भूमि में कम उत्पादन एवं आय कम।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	नवीन प्रजाति का शोध धान महाक्रान्ति जलभराव क्षेत्र में लम्बी मजबूत तथा 80–85 कुन्तल प्रति हेक्टेयर पैदावार ऊसर में सफल गेहूँ की प्रजाति ए–1 का उत्पादन 60–65 कुन्तल प्रति हेक्टेयर ऊसर भूमि हेतु सफल 120 दिनों में पक जाती है।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	महाक्रान्ति धान ऊसर तथा जलभराव हेतु उपयुक्त, उत्पादन अच्छा एवं स्थानीय स्तर पर बीज की उपलब्धता।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	स्वप्रेरित एवं केवीके के द्वारा तकनीक से सीख मिली।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	धान 80–85 कुन्तल प्रति हे. लाभ 112000 रू. कुललागत रु. 34000 / – गेहूँ 60–65 कुन्तल प्रति है. लाभ 97500 कुल लागत रु. 35000 / – वीसी. अनुपात (धान) 2.29 वीसी अनुपात (गेहूँ) 1.78
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	350 कृषक इन प्रजाति की खेती से जुड़ चुके हैं।
10.	आधार संख्या	:	5776 6213 3305

श्री रणवीर सिंह का धान क्षेत्र
(धान की मन्दाकिनी प्रजाति का क्षेत्र)

श्री रणवीर सिंह का गेहूं क्षेत्र
(गेहूँ की ए–1 प्रजाति का क्षेत्र)

महोबा

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	स्थायित्व जीवन स्तर हेतु मछली पालन
2.	विषय क्षेत्र	:	मत्स्यपालन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राजेन्द्र कुमार ग्राम–अतरफाता, जिला–महोबा 210426 मो० 9935604696, शिक्षा–आई.टी.आई. जोत–05 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	फसल उत्पादन से श्री कुमार के परिवार की आवश्यकताएं पूरी नहीं हो रही थी। गरीबी से तंग आ गये थे। केवीके द्वारा प्राप्त तकनीक से मत्स्य पालन को प्रेरित हुए।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	मत्स्यपालन
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	कृषि के साथ मत्स्यपालन करने से आय बढ़ी, खुशहाली एवं समृद्धि आई तथा खेती में
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके बेलाताल, महोबा
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	रोहू, कतला, मत्स्य पालन से 6 कुन्तल, 11 कुन्तल 2015–16 एवं 2016–17 मे क्रमशः 24000 तथा 44000 रू. मछली की विक्री से प्राप्त हुआ जो कृषि उपज के अतिरिक्त आय मिली।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	उत्सुक किसान इन्हें देख समझ कर आगे बढ़ रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	6226 4829 2862

मछली पालन

फिरोजाबाद

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	पाली हाउसके द्वारा बेमौसमी सब्जी का उत्पादन
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान क्षेत्र
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री अभिषेक प्रताप सिंह पुत्र हरि ओम सिंह उम्र–23, ग्राम एवं पोस्ट–सोथरा, सिरसागंज अराव जिला–फिरोजाबाद मो० 9412525778 शिक्षा–एम.टेक. भूमि–2 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	पारम्परागत खेती के अलावा कोई आय के अन्य स्त्रोत नहीं।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	केवीके से बेमौसमी खेती की तकनीकी जानकारी प्राप्त कर पालीहाउस स्थापित कर खेती प्रारम्भ की।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	श्री सिंह ग्रामीण शिक्षित युवाओं के प्रेरणास्त्रोत बने उनके प्रयास से पालीहाउस में संरक्षित बेमौसमी सब्जियाँ से पैदावार अच्छी कीमत से आय में बढ़ोत्तरी प्राप्त की।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके से प्रशिक्षण एवं तकनीकी प्राप्त
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	1 एकड़ क्षेत्र में पालीहाउस स्थापित किया। 40 लाख का व्यय हुआ। वर्ष 2017–18 प्रथम वर्ष रंगीन शिमला मिर्च 15 लाख की बेचीं।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	श्री सिंह के प्रयास से कई युवा कृषक प्रेरित हुए हैं तथा वह सब्जी पौध, फलदार पौध आदि के उत्पादन से आगे बढ़ रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	2866 2308 8788

कैप्सिकम फसल का दृश्य

रंग शिमला मिर्च की पिकिंग

हमीरपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	बागों में नवीन सुधरी प्रजाति
2.	विषय क्षेत्र	:	फलोद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राम रतन प्रजापति ग्राम एवं पोस्ट–विवार जिला हमीरपुर–210501 ब्लाक–मुस्करा, मो० 9415145160 उम्र–56 वर्ष शिक्षा–5 पास भूमि–04 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	वर्षा आधारित खेती
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री प्रजापति जी ने बाग को स्थापित किया जिसमें मौसमी आंवला बेर की अच्छी प्रजातियों को रोपित किया
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	क्षेत्रीय अनुकूलता के अनुसार औद्योगिक फलों का रोपण किया तथा अन्य लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनें।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके कुरारा हमीरपुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात 2.3 सामान्य फसलों की तुलना में बागवानी से ढाई गुना लाभ प्राप्त किया गया। ४ हे. की बागवानी से ४–५ लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा है साथ ही कुल लागत 1 लाख रु. आती है।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	कम पानी की स्थिति में बुन्देलखण्ड में तेजी से तकनीकी का विस्तार 50 हेक्टेयर क्षेत्र विस्तार अपने ही गाँव तथा अन्य आसपास के गाँव भी दायरे में, बाग लगाने में लागत कम आती है तथा जाखिम भी नहीं है जानवरों से नुकसान हेतु प्रारंभिक देखभाल आवश्यक है।
10.	आधार संख्या	:	3820 9425 5830

किन्नो ऑर्चर्ड

आंवला ऑर्चर्ड में सरसों की सहफसल

फर्रूखाबाद

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	पालीहाउस मे खीरा एवं फूलों की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री भानुप्रताप सिंह पुत्र श्री जगपाल सिंह ग्राम सिरौली मुहम्मदाबाद, जिला–फर्रूखाबाद शिक्षा–स्नातक, भूमि–1 एकड़ पालीहाउस–1000 वर्ग मी. मो० 9918895030
4.	समस्या / चुनौती	:	औद्योगिक फसलें – मुख्य झरवेरा सब्जी खीरा गुणवत्तायुक्त पुष्प एवं खीरा से अधिक उत्पादन तथा ज्यादा लाभ प्राप्त करना
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	पुष्प झरवेरा, सब्जी खीरा से अधिक आय प्राप्त करना
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	पालीहाउस के द्वारा
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र एवं उद्यान विभाग
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात 2.50। उक्त तकनीक से एक एकड़ में ६–७ लाख रुपये शुद्ध लाभ प्राप्त किया गया।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	इस तकनीक को देखकर अन्य किसान उपयोग में ला रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	2876 5022 7631

पालीहाउस मे उत्पादित खीरा की फसल

जालौन

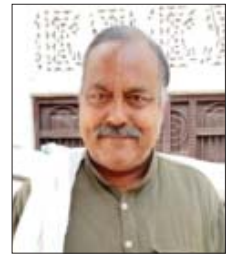

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन
2.	विषय क्षेत्र	:	टिकाऊ खेती
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री अशोक कुमार ग्राम एवं पोस्ट–मडौरी, ब्लाक जालौन जिला जालौन मो० 9450288811, उम्र – 56 वर्ष शिक्षा–स्नातक, जोत–10 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	1.मृदा उर्वरता में ह्रास से उत्पादन कम एवं उत्पाद की गुणवत्ता मे कमी 2.फसलों पर निर्भरता एवं बाजार में कीमत कम मिलने से आर्थिक स्थिति कमजोर
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	केवीके जालौन के सम्पर्क में तकनीकी प्राप्त कर स्वप्रेरणा से वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर अपने खेतों में प्रयोग तथा अतिरिक्त उत्पादन से बिक्री की तथा साथ में केचुओं की बिक्री से आय प्राप्त की।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	पास के गाँवों में 5000 से अधिक कम्पोस्ट इकाईयां स्थापित हुई तथा कम्पोस्ट खाद की 20 जनपदों में आपूर्ति की।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके जालौन
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	प्रारम्भ मे 5 लाख बैंक से ऋण लेकर वर्मीकम्पोस्ट ईकाई की अवस्थापना निवेश पर 6 लाख वर्ष में शुद्ध आय 10 लाख वी.सी. अनुपात 1.6
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	15–20 कृषक प्रेरित होकर वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन कर रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	9695 4223 4167

वर्मी–कंपोस्ट इकाई के लिए उचित छाया और पर्याप्त क्षेत्रवर्मी–कंपोस्टके द्वारा उत्पादित की गई वर्मी कम्पोस्ट

हरदोई

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	टमाटर की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	फसल उत्पादन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री कौशल मौर्य ग्राम असेवली, पोस्ट पिकरी, ब्लाक कछौना मो० 9580742284 उम्र–32 वर्ष, शिक्षा–हाईस्कूल जोत–2.5 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	टमाटर मे फल भेदक के प्रकोप से गुणवत्ता एवं उत्पादन में कमी
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	40–50 प्रतिशत उत्पादन में फलभेदक से नुकसान कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा फेरेमन ट्रेप खेत में लगाया गया। फलभेदक के प्रकोप के समय कीटनाशी इन्डोकार्व प्रति 15 लीटर पानी में 20 मिग्रा. दबा से छिड़काव कर नियंत्रित कर लिया गया।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	टमाटर में फलभेदक के नियंत्रण में प्रभावी पाया गया।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	2012 में केवीके के सम्पर्क में मौर्य जी आये, तकनीकी प्राप्त कर प्रयोग किये एवं अधिक उत्पादन के साथ अधिक आय प्राप्त की।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	एकीकृत नाशी जीव प्रबन्धन द्वारा श्री कौशल जी द्वारा 2.25 से 2.37 लाख प्रति हेक्टेयर की आय प्राप्त हुई।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	आसपास के किसानों अंगीकृत होकर इसका लाभ उठा रहे हैं तथा फलभेदक की समस्या से ग्रस्त लोगों को निदान मिला है।
10.	आधार संख्या	:	8768 1387 7895

टमाटर की खेती

हाथरस

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	जैविक खेती से फसल उत्पादन
2.	विषय क्षेत्र	:	जैविक खेती
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री हरेन्द्र सिंह ग्राम–पट्टी सकती, पोस्ट–मडाका जिला–हाथरस मो० 8410279327 उम्र–33 वर्ष शिक्षा–इन्टरमीडिएट, जोत–30 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	रसायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से उप्ताद की गुणवत्ता ठाके न होने से बाजाद में कीमत कम मिलना
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	प्राकृतिक फसल उत्पादन, जीवामृत तथा धनजीवामृत द्वारा।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	स्थानीय साधनों द्वारा तैयार कर प्रयोग करने से लागत कम तथा गुणवत्तायुक्त उत्पाद प्राप्त होता है। मूल्य अधिक कृषि उत्पाद से मिलता है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके हाथरस
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी. अनुपात 4.21, जैविक खेती से प्राप्त फसल उत्पाद की तुलना में परंपरागत विधि से आलू के उत्पादन चार गुना लाभ प्राप्त हुआ। १ हे. से एक लाख रुपये शुद्ध मुनाफा अधिक प्राप्त हुआ।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	कृषक समूह मे ग्राह्यता तेजी से बढ़ रही है।
10.	आधार संख्या	:	5874 9170 2857

जीवामृत तैयार करता किसान

आलू की फसल पर जिवामृत का स्प्रे करता किसान

मथुरा

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	भिन्डी में जैविक कीटनाशी का प्रयोग
2.	विषय क्षेत्र	:	एकीकृतनाशी जीव प्रबन्धन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री ओमप्रकाश ग्राम–मंदीपुर, ब्लाक–फरह, जिला–मथुरा मो० 9927753961, उम्र–३५ शिक्षा–मिडिल
4.	समस्या / चुनौती	:	फलभेदक कीट से भिन्डी की फसल में अधिक नुकसान, उत्पादन में कमी तथा गुणवत्ता प्रभावित भिण्डी के भाव कम
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	भिण्डी फसल पर निम्बिस़डान के छिड़काव से कीट नियंत्रण।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	भिण्डी की उपज में वृद्धि
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	आई.आई.वी.आर. वाराणसी
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	बाजार में अच्छी कीमत मिलती है तथा कीट नियंत्रण से पैदावार में बढ़ोत्तरी हुई तथा लाभ का स्तर बढ़ा। १ एकड़ में लागत रु. 40500 कुल आय रु. 138000 (कु. विक्रयदर) शुद्ध लाभ में से 97500 प्राप्त कुल उपज 115 कु. / हे. वी.सी. अनुपात 3:41 शुद्ध एक लाख रु का लाभ प्राप्त हो रहा है।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	कृषक समूह में ग्राह्यता तेजी से बढ़ रही है। 6 ग्रामों में 20 कृषक इस तकनीक से प्रभावित।
10.	आधार संख्या	:	5874 9170 2857

नीम आधारित जैविक कीटनाशी का प्रयोग

जैविक कीटनाशी के द्वारा उत्पादित भिन्डी की फसल

बिजनौर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	गन्ने में सघन सहफसली खेती (आलू–प्याज–हल्दी)
2.	विषय क्षेत्र	:	फसल विविधीकरण / संसाधन संरक्षण
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री मुकेश कुमार आर्य पुत्र श्री गेंदा सिंह, ग्राम भोजपुर ब्लाक कीरतपुर जिला बिजनौर मोबाइल – 9411843911 उम्र – 48 वर्ष, शिक्षा – इण्टरमीडिएट, जोत – 3 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	प्रति इकाई क्षेत्र से कम आय प्राप्त होना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री मुकेश कुमार द्वारा आलू, प्याज, हल्दी, गन्ने के बीच में लगाते है। अक्टूबर के दूसरे हफ्ते में नाली में गन्ना 120 सेमी की दूरी पर रखते हुए दो लाइन के बीच में आलू बोया। आलू की खुदाई के बाद फरवरी प्रथम सप्ताह में 5 लाइनों में प्याज लगाया। प्याज की खुदाई के बाद माह मई के द्वितीय सप्ताह में एक लाइन हल्दी बोई।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	भूमि संसाधनों का बेहतर उपयोग, परिवार की आय में वृद्धि, इस पद्धति में रोजगार सृजन तथा पोषक मूल्यवृद्धि हुई। उपज में आलू 156.25 कुन्तल, प्याज 125 कुन्तल तथा हल्दी 187.5 प्रति हेक्टेयर है। गन्ने के साथ अतिरिक्त उत्पादन मिला।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र नगीना, बिजनौर तथा स्वःप्रेरित।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	तीनों फसलों की गन्ने के साथ सहफसली खेती से कुल रू. 516440 / – उसी भूमि से आय प्राप्त हुई। गन्ने से 1406.25 कुन्तल प्रति हेक्टेयर पैदावार जो जनपद के औसत पैदावार से (784 कु. / हे.) अधिक हुई। वीसी अनुपात 3.80
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	प्रारम्भ में सहफसली खेती के मॉडल को मान्यता मिली। कई किसानों एवं अधिकारियों द्वारा देखा गया। छोटे सीमान्त कृषकों के द्वारा इसे अच्छा मॉडल सिद्ध हुआ। दुगनी आय प्राप्त करने के उद्देश्य से सफल मॉडल है। पास के किसानों द्वारा प्रेरित हुआ।
10.	आधार संख्या	:	8499 5849 1098

गन्ने के साथ हल्दी की खेती

रामपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	अधिक लाभ हेतु लघु किसानों के लिए ब्रायलर पालन बेहतर विकल्प।
2.	विषय क्षेत्र	:	पशुपालन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राकेश कुमार ग्राम – दोहरिया, पोस्ट – जिवाई कादिम जिला – रामपुर जिवाई कादिम जिला रामपुर मोबाइल – 8650719883 उम्र – 35 वर्ष शिक्षा – इण्टरमीडिएट, जोत – 2 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	स्वःरोजगार / आय सृजन
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	आय सृजन का ब्रायलर पालन एक अच्छा विकल्प है। श्री राकेश कुमार ने प्रारम्भ में छोटी ब्रायलर इकाई 40.15 फीट में जगह में रू. 6000 लगाकर 500 चूजों से शुरू की। चूजे राशन, दवाईयाँ, श्रम आदि में 30000 रू. व्यय हुआ। यह कार्य 2014 मे शुरू हुआ। आगे उन्होंने 2000 चूजे फिर 8000 चूजे बढ़ाकर 27.250 तथा 27.260 फुट से यूनिट बनाकर डीप लीटर सिस्टम से ब्रायलर पालन का कार्य बढ़ाया
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	खेती के अतिरिक्त ब्रायलर पालन से 125000 प्रति रू. आय खर्च निकालकर प्राप्त हुई तथा भूमि में ब्रायलर की खाद डालने से उर्वरता स्तर में बढ़ोत्तरी।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र घमोरा, रामपुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	कुल लागत रू. 5068000 प्रति वर्ष तथा कुल आय 5947000 / – प्रति वर्ष। वीसी अनुपात 1.17
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	50 किसान आस–पास के गांवों / कस्बों में व्यवसाय से प्रभावित होकर ब्रायलर पालन कर रहा है।
10.	आधार संख्या	:	उपलब्ध नहीं है।

ब्रायलर उत्पादन

ब्रायलर उत्पादन इकाई

सहारनपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	गन्ने के साथ आलू की सहफसली खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री शिकेन्द्र सिंह ग्राम एवं पोस्ट नन्हैरा, गुज्जर जिला सहारनपुर मोबाइल – 8126067865 उम्र–46 वर्ष, शिक्षा – बी.ए. जोत दृ – एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	एकल गन्ने से कम लाभ प्राप्त होना
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री सिंह ने गन्ना की प्रजाति को .0238 को नाली विधि अन्तिम सितम्बर माह में आलू कुफरी बहार के साथ गन्ने के बीच दो लाइने लगाई। सभी निवेश वैज्ञानिक से संस्तुति के आधार पर प्रयोग में लाया गया।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	श्री सिंह गन्ने की बुवाई गेहूँ काटने का बाद करते थे जिससे कि गन्ने का उत्पादन 730 कु. / है. मिलता था तथा केवीके की सलाह पर गन्ने की आलू के साथ सहफसली खेती पर गन्ना 1350 कु. / है. पैदावार के साथ आलू का अतिरिक्त उत्पादन मिला तथा गन्ना पहले से दुगना पैदा हुआ।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	उपरोक्त नवोन्मेषी से 1350 कु. / है. गन्ना तथा 255 कु. / है. आलू पैदावार के साथ 300 रू. प्रति कुन्तल तथा 600 रू. प्रति कुन्तल आलू की बिक्री से 3.65 लाख रू. का लाभ मिला जो कि पूर्व में केवल 80000 रू. प्रति हेक्टेयर मिलता था।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	इस तकनीकी / नवोन्मेषी को देखकर 10 किसान तथा जनपद के 73 किसान इस तकनीक से खेती कर रहे है। लगभग 63 हेक्टेयर भूमि पर इसका विस्तार हुआ।
10.	आधार संख्या	:	7701 5370 7887

रबी फसल में आलू (कुफरी बहार)+गन्ना (सीओ–०२३८)

आलू के खुदाई के बाद गन्ने की खड़ी फसल

गाजियाबाद

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	लेजर लेवलर का व्यवसायिक उपयोग
2.	विषय क्षेत्र	:	संसाधन संरक्षण
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री प्रमोद त्यागी, ग्राम बयाना जिला गाजियाबाद मोबाइल – 9313294588 उम्र – 54 वर्ष, शिक्षा – स्नातक जोत – 6 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	खेती हेतु ढालू भूमि से उप्तादन लेने की चुनौती
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	लेजर लेवलर से जमीन समतल कर पानी की बचत की तथा पोषक तत्वों के नुकसान को रोका साथ ही किराये पर लेजर लेवलर से आय अर्जन किया।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	लेजर लेवलर के प्रयोग से भूमि समतल हुई तथा अधिक उत्पादन प्राप्त हुआ तथा पोषक तत्वों का उपयोग समान रूप से हुआ।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र गाजियाबाद
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	सम्पूर्ण लेजर लेवलर की कीमत 1.5 वर्ष में वसूल हुई। प्रतिवर्ष खेती तथा लेवलर किराये से 14 लाख की आय होने लगी।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	निजी भूमि का प्रयोग करने के बाद जनपद गाजियाबाद में इसका प्रयोग होने लगा। मेरठ, हापुड़, बुलन्दशहर जिलों में तकनीक विस्तारित हो रही है।
10.	आधार संख्या	:	2211 1986 0362

पोली हाउस में जरवेरा पुष्प की खेती

गेहूं की सीड ड्रिल से बोबाई

शाहजहाँपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	बौछारी सिल्वर पलवार एफ.आई.आर.एस.वी. विधि से खरबूजा की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान सब्जी उत्पादन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राजू बिन्दर सिंह ग्राम एवं पोस्ट–शाहबाजनगर, ब्लाक–दादराल मो० 9450445817 उम्र–35 वर्ष, शिक्षा–स्नातक, जोत दृ 15 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	(ए.ई.एस.) सदर तहसील भूमि समतल नहोना पूर्ण, सिंचित मुख्य फसल धान गेहूँ गन्ना उत्पादन की चुनौती
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	ड्रिप सिंचाई एफ.आई.आर.एस.वी. पद्धति से सिल्वर मल्च (पलवार) की मदद से संकर खरबूजा की उन्नति खेती
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	भूजल के दोहन को रोकना, खरपतवारों की रोकथाम तथा श्रमिकों का कम इस्तेमाल तथा गुणवत्तायुक्त उत्पाद तैयार किए एवं आय में बढ़ोत्तरी की।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	निजी कम्पनी / कृषि विज्ञान केन्द्र
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	खरबूजा की मुस्कान तथा बोबी प्रजाति 7 एकड़ में रोपित की तथा 1050 कुन्तल पैदावार हुई जिससे 1575000 रू. आय के विपरीत 560000 रू. की लागत आयी शुद्ध आय 1015000 रू. वीसी अनुपात 2.81
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	इस तकनीक का विस्तार आस–पास के गांवों में 20–25 प्रतिशत हुआ।
10.	आधार संख्या	:	5826 8786 2215

कटाई के समय की फसल

बाजार के लिए फसल की ग्रेडिंग करता किसान

मेरठ

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	गन्ने के रस से सिरका तैयार करना
2.	विषय क्षेत्र	:	मूल्य संवर्धन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री नरेन्द्र सिरोही ग्राम–सिटकरी मेरठ मो० 9084593149, शिक्षा– स्नातक, उम्र–50 वर्ष शिक्षा–स्नातक कृषि, जोत–1.25 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	कम आय स्त्रोत एवं बेरोजगारी
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	सिरका गन्ने या जामुन के रस से बनाया जाता है तथा सेव का सिरका भी सीजन पर तैयार किया जाता है
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	श्री सिरोही द्वारा वर्ष में 50–60 टन ब्रान्डेड सिरका गाँव में तैयार करते हैं। इस सिरके की आपूर्ति बिक्री मेरठ मे 25 बिक्री केन्द्रों द्वारा की जा रही है एवं मेडिकल स्टोर, ग्रोसरी स्टोर आयुर्वेदिक दवा स्टोर तथा रोड के किनारे होटल में आपूर्ति कर बिक्री की जाती है। 1 ली. तथा) ½ ली. की पैकिंग मे उपलब्ध है। वह जी.एस.टी. आदि का विधिक लाइसेंस भी रखते है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	एस.आई.आर.डी.वी.के.टी. लखनऊ / केवीके हस्तिनापुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	प्रति बोतल (1लीटर) से 15रु का लाभ कमाया जा रहा है। प्रतिवर्ष 75000 रू. शुद्ध मुनाफा कमा रहे हैं। वह अब कृषि भूमि पर आश्रित नहीं हैं।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	श्री सिरोही का मानना है कि आस–पास के युवा इस उद्यम को ग्राह्य करे तो वह बड़े पैमाने पर बेरोजगारी समाप्त कर सकते हैं। साथ ही देश के कई हिस्सों में आवश्यकता अनुरूप मांग का आपूर्ति की जा सकती है तथा अफ्रीका आदि देशों मे निर्यात की प्रबल सम्भावनाएं हैं।
10.	आधार संख्या	:	2708 0660 4013

गन्ने के रस से सिरका तैयार कर फसल का मूल्य संवर्धन करना

मुजफ्फरनगर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	उर्द की फसल में खीरा की मेंड़ों पर सहफसली खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान / कृषि
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री नवाब सिंह ग्राम–मन्टोदी, ब्लाक – जानसठ, जिला–मुजफ्फरनगर। मो० 9259222910, उम्र–46 वर्ष शक्षा–स्नातक , जोत–5 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	बाजार मांग की पूर्ति एवं अतिरिक्त आय
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री नवाब सिंह जी ने बाजार के सर्वे में पाया कि अक्टूबर नवम्बर में खीरा की बेहद मांग रहती है तथा खीरा महंगा रहता है, किन्तु बरसात खीरा में जोखिम रहता है। उसे बचाने के लिए उर्द के साथ मेड़ों पर खेती की जो कि सफल रही ।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	उर्द दाल की प्रमुख फसल है। शादी में अक्टूबर नवम्बर मे खीरा की मांग रहती है। यह तकनीक छोटे सीमान्त किसान के लिए उपयुक्त है क्योकिं वह गन्ना कम जोत होने के कारण बोने में असमर्थ है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके मुजफ्फरनगर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	उर्द से लाभ लेने के साथ सहफसली खेतों से खीरा द्वारा आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होता है। खीरा से शुद्ध लाभ 60000 रू. मिला तथा उर्द से 22500 रू. । उर्द से आय के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	9 गांवों मे विस्तार के साथ 44 किसान अंगीकार कर चुके हैं। तकनीकी विस्तार ले रही है। 27 हेक्टेयर क्षेत्र में तकनीकी अपनाई जा रही है।
10.	आधार संख्या	:	अप्राप्त

उठाए बिस्तर पर खीरा + उर्द की खेती

खीरा की खेती

पीलीभीत

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	अनुपयुक्त सीरेंज द्वारा ड्रिप सिंचाई
2.	विषय क्षेत्र	:	सिंचाई विधियाँ
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री हरजीत सिंह ग्राम–कुँवरसिंह, पीलीभीत मो० 7500182407, उम्र–35 वर्ष, शिक्षा–एम.बी.ए. क्षेत्रफल–12.5 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	तराई मावर क्षेत्र में कम पानी चाहने वाली फसलों मे सिंचाई कठिन कार्य
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	ड्रिप सिंचाई पद्धति कम लागत में अनुपयोगी सिंरेज द्वारा
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	किसान के लिए सस्ती एवं उपयोगी तकनीक कम पानी वाली फसलों, पौधों फलदार पेड़ों के लिए उपयोगी तकनीक
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके पीलीभीत
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	ड्रिप सिंचाई विधि काफी मंहगी है जो छोटे किसानों के लिए पहुँच से दूर है परन्तु इस तकनीक से ड्रिप सिंचाई सस्ती सुलभ स्थानीय साधनों द्वारा की जाती है। इस विधि में प्रारंभिक व्यय शुन्य आता है जब की लाभ पारंपरिक विधि की तुलना में ५० प्रतिशत से अधिक लाभ प्राप्त किया गया।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	किसानों के लिए उपयोगी तथा कृषक देखकर प्रेरित हुए है एवं विस्तार हो रहा है।
10.	आधार संख्या	:	अप्राप्त

डिस्पोजेबल सिरिंज का उपयोग करके ड्रिप सिस्टम

बागपत

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	लतावाली सब्जी का लो–टनल पालीहाउस में उत्पादन
2.	विषय क्षेत्र	:	लतावाली सब्जी की अगेती पैदावार लेना
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री दीपक कुमार शर्मा पुत्र चमन लाल शर्मा ग्राम–लहचुस लहचौदा, पोस्ट–रातौल, जिला–बागपत उम्र–47 वर्ष, शिक्षा–इण्टरमीडिएट मो० 8171740675, जोत–2 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	फरवरी मार्च में लतावाली सब्जी की बुवाई से प्रति इकाई हेक्टेयर से कम आय प्राप्त होना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	लो–टनल पालीहाउस में कद्दूवर्गीय फसलों खीरा ककड़ी खरबूजा तरबूज लौकी कद्दू तोरई टिण्डा आदि की बुवाई दिसम्बर, जनवरी मे करने से 45 दिन अगेती फसल
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	कम लागत से अगेती फसल की पौध तैयार कर 1–1.5 माह पूर्व फसल प्राप्त कर बाजार में बिक्री से ज्यादा लाभ प्राप्त होता है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके बागपत तथा डी. एच.ओ.
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	अतिरिक्त आय 80000–90000 रू. प्रति हेक्टेयर अगेती फसल से बाजार मूल्य अधिक मिलता है। मार्च से मई के बीच यह अवसर कृषको को प्राप्त होता है।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	1000 किसान से अधिक इस तकनीक से लाभ उठा रहे है। 1500 हेक्टेयर क्षेत्रफल विस्तार
10.	आधार संख्या	:	2793 6021 0308

लो टनल पौलो आउस में लता बाली सब्जियों की कृषि तकनीक

लौ टनल प्रौद्योगिकी के माध्यम से बोतल गार्ड की खेती की शुरुआती बुवाई

मुरादाबाद

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	मशरूम उत्पादन तकनीकी
2.	विषय क्षेत्र	:	मशरूम उत्पादन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री आराम सिंह ग्राम–राजस्थाल, जिला–मुरादाबाद मो० 9416316050, उम्र–56 वर्ष, शिक्षा–स्नातक भूमि–4.5 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	परामपरागत फसलों से लागत की तुलना में कम लाभ मिलना, कृषि विविधीकरण के द्वारा अन्य कृषि आधारित उद्यम से लाभ प्राप्त करना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	बटन मशरूम बहु पक्तियों में किसान उगाते हैं। उगाने के पूर्व कयारियों को 2 प्रतिशत फार्मलीन के घोल से उपचारित करके सम्पूर्ण बैड को उपचारित करते हैं।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	ग्रामीण युवाओं के लिए यह तकनीक अंत्यन्त सरल है एवं सस्ती है क्योंकि इसकी मांग अधिक है तथा आय का अच्छा स्त्रोत है तथा संतुलित आहार मे तत्वों की कमी की पूर्ति करती है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके मुरादाबाद
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	आराम सिंह जी के पास 3000 वर्ग फीट क्षेत्र से मशरूम उत्पादन कर 2016–17 मे 4 लाख रू. कमाये कुल आय रु. 5. 65 लाख, व्यय रु. 1.65 लाख शुद्ध लाभ रु. 4 लाख। वीसी अनुपात 2.42
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	10–12 कृषकों ने तकनीकी ग्रहण की बटन मशरूम से अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है।
10.	आधार संख्या	:	6726 7853 9049

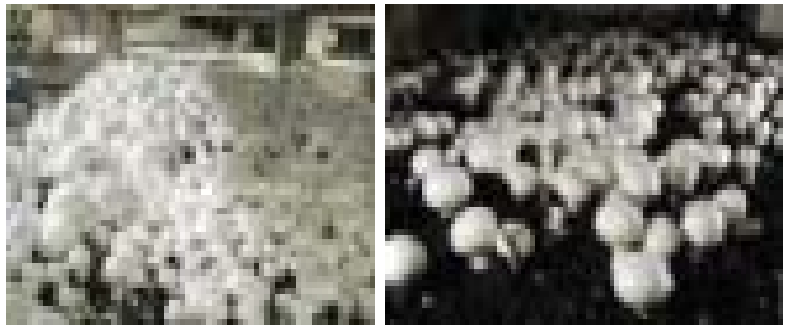

कटाई हेतु तैयार मशरूम

बुलन्दशहर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	पुष्पों की खेती से आय सृजन
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान / फ्लोरी कल्चर
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री मदन पाल उम्र–66 वर्ष, शिक्षा–परास्नातक, क्षे.फ. 7.5 एकड़ ग्राम एवं पोस्ट–जौलीगढ़, जिला–बुलन्दशहर मो० 9358081044
4.	समस्या / चुनौती	:	फसलचक्र–धान–मेरीगोल्ड–मक्का–बरसीम–गन्ना कृषि विविधीकरण से प्रेरित हो कर अभिनव प्रयोग करना
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	पुष्पों की बाजार में कमी तथा मांग अधिक होने पर संतुलित उर्वरकों के प्रयोग के साथ जैविक कीटनाशी जैविक खादों के प्रयोग कर कीट एवं बीमारियों की रोकथाम करके पुष्पों की सफल खेती करना।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	परामपरागत कृषि की तुलना में पुष्पों की खेती की व्यवसायिक दृष्टि से अधिक सम्भावना है। इसकी खेती लाभकारी है यह अन्य किसानों के लिए प्रेरणादायक है। रोजगार श्रजन तथा नियमित आय से खुशहाली आयेगी।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके बुलन्दशहर में 1 रू. लगाने से 3.5 रू. मिल रहे है जबकि कोई अन्य फसल इतना मुनाफा नही दे पा रही है
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	3.5
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	इस फसलचक्र को आस–पास के ग्रामीण अपना रहे हैं जिससे श्रमिकों को पूरा समय रोजगार मिल रहा है। इससे रोजगार ग्राम मे ही मिलने से शहरों की ओर पलायन रूक रहा है।
10.	आधार संख्या	:	5578 2099 1527

खिलते हुए फूल

सुल्तानपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	फूलगोभी से अधिक आय हेतु पौधे से पौधे की दूरी का प्रबन्धन
2.	विषय क्षेत्र	:	सब्जी उत्पादन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री धर्मराज वर्मा ग्राम–त्रिलोकचन्दपुर, भदैया सुल्तानपुर उम्र–37 वर्ष, शिक्षा–इण्टरमीडिएट, भूमि–4.75 मो० 7800585885
4.	समस्या / चुनौती	:	पूर्वी प्लेन जोन में सिंचित दशा में कम लाभ
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	सामान्यतया फूलगोभी की दूरी 45×60 सेमी रखी जाती है। इसमें 1 हेक्टेयर में 37000 पौधे आते हैं। श्री वर्मा जी ने इस दूरी को कम करके 50×40 सेमी करके 1 हेक्टेयर में 50000 पौधे रोपित किए।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	पौध संख्या बढ़ने से उत्पादन फूलों की संख्या बढ़ी जिससे लाभ भी बढ़ा तथा लागत मे कोई अन्तर नहीं आया। इस तकनीकी को अन्य किसानों ने अपनाया और फायदा उठाया।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके सुल्तानपुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	सामान्यतया 45×60 सेमी से कुल आय 268265 रू. तथा 50×40 सेमी से कुल आय 384758 रू. प्राप्त हुई। वीसी. अनुपात 5.22 तथा 35 प्रतिशत फूल अधिक उत्पादित किए गये।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	आस–पास के गाँव मे 52–55 किसानों ने इसको अंगीकृत किया।
10.	आधार संख्या	:	2075 5479 9591

प्रारंभिक फूलगोभी में अंतर प्रबंधन (50×40 सेमी)

प्रारंभिक फूलगोभी में अन्तर (45×60 सेमी) प्रबंधन का प्रभाव

एटा

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	मधुमक्खी पालन द्वारा दुगनी आय, बाग के साथ सरसों से प्राप्त करना।
2.	विषय क्षेत्र	:	मधुमक्खी पालन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री फूल सिंह आर्य पुत्र श्री प्यारे लाल ग्राम–बहानपुर, पोस्ट–ओन, जिला–एटा उम्र–71 वर्ष, शिक्षा–हाईस्कूल, भूमि–2 एकड़ मो० 9411015152
4.	समस्या / चुनौती	:	कम जोत एवं साधनों के अभाव में कम आय। केवीके एटा से मधुमक्खी पालन की जानकारी लेकर व्यवसाय को चुना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	एन.डी.आर.आई. करनाल से मधुमक्खीपालन से प्रशिक्षण द्वारा डा. महेन्द्र धइया जी से प्रेरणा लेकर मधुमक्खी पालन के साथ व्यवसाय शुरू किया। 5 वर्ष पूर्व 2 बक्शों से प्रारम्भ कर आय 328 बक्शों की मदद से मधुमक्खी पालन से अच्छा व्यवयाय चल रहा है।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	अतिरिक्त आय मौनपालन से प्राप्त हो रही है। तिलहनी फसलों की पैदावार 5 प्रतिशत पौलीनेसन के कारण बढ़ी अलग–अलग स्थानों पर ले जाने से मौनवंश से शहद उत्पादन बढ़ा स्वयं से अन्य लोगों को सिखाने का अवसर मिला
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके / एन.डी.आर.आई. करनाल
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	328 बक्शों से कुल आय 615000.00 रू. तथा कुल व्यय 215000 रू. कुल शुद्ध लाभ 400000 रू. प्राप्त हुआ। शहर की बिक्री दर रु. 100–125 प्रति किग्रा।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज	:	3 गाँवों में 11 किसान मधुमक्खी पालन अपना रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	7695 3879 8639

मधुमक्खी रखरखाव द्वारा मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण

मधुमक्खी फ्रेम में शहद का भण्डार

मिर्जापुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	ट्रैक्टरचालित जनरेटर से डीजल की बचत एवं खेती कार्य मे क्षमता बढ़ाना
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि अभियांत्रिकी
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री धर्मेन्द्र कुमार ग्राम–शोभी, ब्लाक–पतेहरा, मिर्जापुर मो० 7081385006, 7704992690, उम्र – 38 वर्ष, शिक्षा–एम.ए., आई.टी.आई. ड्राफ्ट मैकेनिक जोत – क्षे.फ. 4 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	ए.ई.एस. पर्वतीय क्षेत्र, लाल मिट्टी वर्षा आधारित खेती, कम उत्पादकता विद्युत की आपूर्ति न्यून सिंचाई के साधनों का अभाव
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी राय तथा स्वयं आई.टी.आई. दक्ष होने पर उन्होनें ऊर्जा का वैकल्पिक स्त्रोत के बारे में सोचा जिससे फसलों की सिंचाई कम लागत में हो, उन्होने 20 के.वी.ए. 3 फेज डायनमों तथा 7.5 केवीए. 1 फेज डायनमों जो ट्रैक्टर से चालित को जोड़कर अतिरिक्त पावर से 3 समर्सिबल पम्प तथा एक मोनो ब्लाक पम्प सिंचाई हेतु फिट किया जिससे जनरेटर में कम समय लगने से कम लागत आई (किराये के जनरेटर की तुलना में)
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	नव विकसित जनरेटर से मनमाफिक पावर के अनुसार बिजली मिलने लगी जिससे जरूरत पड़ने पर फसलों की सिंचाई। समय से हुई इससे कम पानी की दशा में सिंचाई की सुविधा से उत्पादन बढ़ा और समस्या से निजात मिलीएवं लागत में कमी आई।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	बी.एच.यू. / कृषि विज्ञान केन्द्र / कृषि तकनीकी ज्ञान
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	विद्युत की कटौती की समस्या का निदान तथा आवश्यकतानुसार फसलों की सिंचाई सुनिश्चित हुई। उपरोक्त अन्वेषण से अप्रत्यक्ष रूप से ५००० रु. प्रति हेक्टेयर लाभ का आकलन किया गया।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	20 किसान इस तकनीकी को ग्रहण किये। तकनीकी काफी प्रचलित हो रही है तथा कम वोल्टेज विद्युत बाधित की समस्या पर काबू पाया गया।
10.	आधार संख्या	:	8965 8590 5931

विचार और सृजन के पीछे लोगः किसान और वैज्ञानिक

श्री धर्मेंद्र कुमार और केवीके वैज्ञानिक डॉ एस के। ऑपरेटिंग जनरेटर के लिए ट्रैक्टर (40 एचपी) के साथ गोयल

गोण्डा

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	प्रक्षेत्र मशीनीकरण (फार्म मशीनरी बैंक)
2.	विषय क्षेत्र	:	फार्म मशीनरी
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री रविशंकर सिंह पवन ग्राम–चरूहा पोस्ट–परसपुर, जिला–गोण्डा मो० 9450527140, उम्र–42 वर्ष शिक्षा – परास्नातक, भूमि– 4 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	खेती हेतु अनुपयोगी भूमि से उत्पादन कम लागत अधिक सुधरे कृषि यंत्र मशीनरी के प्रयोग से लागत कम आय अधिक प्राप्त।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	लेजर लेवलर से भूमि समतल होने पर जहाँ अनुपयोगी ढालू जमीन पर सिंचाई कठिनाई युक्त थी वही श्री सिंह द्वारा 2 लेजर लेवलर क्रय करके किसानों की मांग पर साथ ही फार्म मशीनरी बैंक शासकीय सहयोग से स्थापित किया । तकनीकी राय केवीके से प्राप्त करके कार्य शुरू किया। वित्तीय सहयोग कृषि मंत्रालय, भारत सरकार का प्राप्त हुआ।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	इस तकनीक से भूमि समतल हुई तथा सिंचाई एवं अन्य लागत कम हुई, उत्पादन बढ़ा तथा लाभ हुआ। पहले 10–12 कुन्तल प्रति हे. उत्पादन मिलता था अब यही बढ़ कर 42 कुन्तल प्रति हेक्टेयर हो गया।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार एवं केवीके
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	समतलीकरण आदि पर 5000–6000 रू. प्रति हेक्टेयर व्यय हुआ जिससे लाभ में 12–15 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई तथा सिंचाई एवं अन्य निवेशों पर लागत में कमी आई।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	विगत 4 वर्षों में – कुल भूमि समतल की गई 633 हेक्टेयर, भूमि की उप्पादकता में वृद्धि देखी गई कुल किसान लाभान्वित – 5732 तथा फसलों का उप्पादन 20–25 प्रतिशत बढ़ा।
10.	आधार संख्या	:	6155 5599 2015

लेजर लेवलर द्वारा भूमि का समतलीकरण

फार्म मशीनरी बैंक

चित्रकूट

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	कृषि सघनीकरण का 2.5 एकड़ माडल
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि एवं पशुपालन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री राम कृपाल पटेल पुत्र श्री बंशी लाल पटेल ग्राम–चकौंध, पो.–चकजफर, जिला–चित्रकूट मो० 9984083631, शिक्षा–इन्टरमीडिएट उम्र–48 वर्ष, जोत–25 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	कृषि में कम रूचि, अधिक लागत लाभ कम तथा बेरोजगारी की समस्या बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बहुतायत से है, क्योंकि खेती हेतु कृषि जलवायु परिस्थिति के अनुकूल नहीं है। वर्षा सूखा बाढ़ जानवर इत्यादि से कृषि समस्याग्रस्त है।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	कृषि पशुपालन तथा उद्यान के साथ खेती, इससे रोजगार सृजन में 50 मानवश्रम का सृजन कृषि सघनीकरण का 2.5 एकड़ का माडल प्रयोग
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	अच्छे बीज मशीनरी का प्रयोग उचित तकनीक तथा कीट रोगों का प्रबन्धन एवं मिश्रित खेती से जोखिम में कमी।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके चित्रकूट, आई.आई.पी.आर. कानपुर, ए.आई.सी.आर.पी. भरतपुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात 3.16 लागत 300000 रू. आय 950000, कुल 25 एकड़ खेती योग्य भूमि पर अपनायी जा रही है
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	उत्पादन जोखिम में कमी, अधिकतम भूमि का उपयोग, एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाना, सामाजिक स्वीकारिता बढ़ी, युवाओं में खेती के प्रति आकर्षण बढ़ा, दुगनी आय प्राप्त करने मे मदद।
10.	आधार संख्या	:	8487 2997 0974

अरहर आईपीए–203

धान की प्रजाति – पूसा 1612

इलाहाबाद

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	मधुमक्खी पालन एक अच्छा व्यवसाय
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि व्यवसाय
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री अजीत कुमार मौर्य पुत्र स्व० श्री रामआधार मौर्य ग्राम व पोस्ट–जगदीशपुर, धनूपुर, ब्लाक–हंडिया जिला–इलाहाबाद, उम्र–34 वर्ष, शिक्षा–इन्टरमीडिएट, जोत–1.875 हेक्टेयर मो० 9198998636
4.	समस्या / चुनौती	:	सीमान्त कृषक तथा आय के साधनों का अभाव
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	कृषि के साथ मधुमक्खी पालन का व्यवसाय
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	श्री अजीत सिंह जी इस समय 2 लाख रू. प्रति वर्ष का कारोबार कृषि के साथ कर रहे हैं।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके इलाहाबाद ने प्रेरित किया, प्रशिक्षण एवं तकनीकी दी।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वर्ष 2016–17 में 18 कुन्तल शहद पैदा किया तथा 130 प्रति किग्रा की दर से बिक्री की । 1 किग्रा शहद में लागत 30 रू. आई। 2016–17 में कुल शहद से आय 234000 रू. प्राप्त हुई। तिलहनी एवं सब्जी वाली फसलों में परागण के फलस्वरूप उत्पादन एवं गुणवत्ता में वद्धि दर्ज की गई। वीसी. अनुपात–4. 33
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	बड़ी संख्या में किसानों द्वारा अंगीकार किया गया उसी गांव तथा आस–पास के अन्य ग्रामों में विस्तार हुआ।
10.	आधार संख्या	:	6552 4887 3019

मधुमक्खी पालन स्थल

अजीत मौर्य मधुमक्खी बाक्स पर काम करते हुए

प्रतापगढ़

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	बेमौसमी सब्जी उत्पादन
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री सुनील कुमार ग्राम शाहाबाद, पोस्ट–मानिकपुर प्रतापगढ़ उम्र–36 वर्ष, शिक्षा–इन्टरमीडिएट, जोत–2.5एकड़ मो० 9919059797
4.	समस्या / चुनौती	:	खेती हेतु अनुपयोगी ढालू भूमि सिंचित बलुई भूमि छोटी जोत सब्जी के उत्पादन हेतु उपयोगी है। बेमौसमी फूलगोभी की सूर्यमुखी के साथ सहफसली खेती।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	जनवरी अन्त में सूर्यमुखी की 3 मीटर लाईन से लाईन की दूरी बुवाई का 15 दिन बाद सूर्यमुखी को दो लाइनों के बीच 4 लाईन फूलगोभी रोपी गई। 60×45 सेमी की दूरी पर सहफसली के रूप गोभी का रोपण किया गया।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	4 लाइनों मे फूलगोभी फरवरी मध्य मेंरोपी गई जब तापमान अधिक होने लगता है। फूलगोभी के लिए बढ़वार में तापमान बाधक होता हैपरन्तु सूर्यमुखी के पौधे की छाया से धूप ताप से फूलगोभी को बचाते हैं जिससे फूल बनने का उचित वातावरण मिल जाता है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके प्रतापगढ़
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	इस तकनीक से कुल आय 155000 रू. प्रति हेक्टेयर वर्ष में प्राप्त होती है।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	वर्तमान मे 7 किसान इस तकनीक को अपना रहे है तथा 10 हेक्टेयर क्षेत्र विस्तार हुआ तथा आस–पास के गांवों में भी विस्तार हो रहा है।
10.	आधार संख्या	:	9697 1405 6230

फूलगोभी क्षेत्र में सूरजमुखी की सहफसली खेती

उन्नाव

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	केला के साथ पातगोभी तथा बटन मशरूम की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	मशरूम की खेती
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री अटल बाजपेई, ग्राम एवं पोस्ट – मोहन जिला उन्नाव मोबाइल – 9695674995 उम्र – 33, वर्ष शिक्षा – परास्नातक जोत – 3 हेक्टेयर
4.	समस्या / चुनौती	:	धान गेहूँ फसलचक्र से कम आय (पराम्परागत खेती से)
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	केला के साथ सहफसली पातगोभी साथ में मशरूम की खेती का अभिनव प्रयोग
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	सामाजिक स्वीकारिता, आर्थिक स्थिति में सुधार नियमित आय के साथ रोजगार के अवसर ग्रामीण युवाओं में मसरूम की खेती के प्रति जागरूकता साथ ही केला एवं पातगोभी नकदी फसल होने से सीधे बाजार में विक्री से आय।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	कृषि विज्ञान केन्द्र उन्नाव
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात 4.5
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	10 किसानों द्वारा अंगीकृत
10.	आधार संख्या	:	9456 9429 2529

मशरूम की खेती हेतु खाद की तैयारी

मशरूम की खेती हेतु बिस्तर तैयार करना

बरेली

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	गन्ने की नाली में बुवाई विधि को ट्रेन्च ओपनर में सुधार से तकनीकी बुवाई
2.	विषय क्षेत्र	:	कृषि अभियांत्रिकी तथा एकीकृत फसल प्रबन्धन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री जबर पाल सिंह ग्राम–करनपुर, ब्लाक–मीरगंज बरेली मो० 9837171007, शिक्षा–इन्टरमीडिएट, क्षेत्रफल–25 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	वार्षिक मध्यम वर्षा मध्यम उर्वरता वाली सभी फसलों हेतु उपयुक्त भूमि होती है । श्री सिंह पारम्परिक खेती से 750 कुन्तल प्रति हे. उत्पादन लेते थे, पर जब से उन्होने नाली में गन्ने की बुवाई में नई तकनीक द्वारा ट्रंच ओपनर से खेती द्वारा 1750–2000 कुन्तल प्रति हे. उत्पादन हुआ तथा अधिकतम पैदाकर 2280 कुन्तल प्रति हेक्टेयर गन्ना पैदा हुआ।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	फरो ओपनर का समायोजन 120–180 सेमी पर किया तथा समतल करके उन्होंने 9 हेक्टेयर में गन्ना बोया तथा साथ में सहफसली खेती के रूप में आलू मटर टमाटर फूलगोभी पातगोभी आदि लगाई। समय पर ड्रिप सिंचाई को भी अपनाया। सभी निवेश तथा खेती की विधियां वैज्ञानिक से स्तुतियों के आधार पर प्रयोग में लायी गई।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	वर्तमान मे इस तकनीक से 25 प्रतिशत क्षेत्र में तकनीक ग्राह्य हुई। प्रायः गन्ना 15 सितम्बर से अक्टूबर में बो दिया जाता है। इस विधि से गन्ने का पारम्परिक विधि की तुलना में दुगना उत्पादन मिला।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	जे.के. सुगर मिल मीरगंज, आई.आई.वी.आर. बरेली तथा केवीके
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात धान 1.85, गेहूँ 1.71, गन्ना + राई 1.5, गन्ना + फूलगोभी 5.45, गन्ना एवं आलू 4.82
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	150 किसान इस तकनीक से प्रेरित होकर अपना रहे हैं। इसे किसानों के समूह एस.एच.जी शासकीय सेवकों प्रसार कार्यकर्ताओं ने अवलोकन कर समाचार पत्र आदि के माध्यम से काफी लोक प्रियता मिली एवं किसान इस तकनीक को अपनाकर लाभ उठा रहे हैं।

सरसों के साथ गन्ना की सघन खेती

श्री जबरपाल सिंह द्वारा एडजस्टेबल ट्रेंच ओपनिंग ब्लेड और लेवलिंग अटैचमेंट के साथ संशोधित किया गया

लखनऊ

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	अधिक मूल्यवान सब्जियों की खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री रमेश वर्मा ग्राम एवं पोस्ट–कासिमपुर विरूहा, ब्लाक–गोसाईगंज, लखनऊ मो० 9936191880, उम्र–43 वर्ष, शिक्षा–इन्टरमीडिएट, जोत–क्षे.फ.–1.5 एक
4.	समस्या / चुनौती	:	पारम्परिक सब्जियों की खेती से आय कम
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	केवीके के द्वारा महंगी सब्जी ब्रोकली पार्सली लाल पत्तागोभी चाइना पत्तागोभी चैटी टमाटर आदि के बीजों की उपलब्धता के साथ 2011 में केवीके लखनऊ आई. आई.एस.आर. द्वारा बाजार भी उपलब्ध कराया गया तथा उन्हें बाजार से लिंक कराया गया। होटल तथा अन्तराष्ट्रीय बाजार इत्यादि से जोड़ा गया। 30–35 दिन की नर्सरी रोपी गई, जुलाई मध्य तथा मध्य दिसम्बर मे बुवाई की गई।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	अधिक मूल्यवान सब्जियाँ 0.5 हेक्टेयर में लगाने पर 26400 रू. व्यय के साथ कुल लाभ 336500 तथा शुद्ध 310100 रू. प्रति हेक्टेयर। वर्ष 2015–16 मे प्राप्त हुआ। वीसी अनुपात 11.75 यह लघु सीमान्त किसानों के लिये किसी वरदान से कम नहीं है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके तथा आई.आई.एस.आर. लखनऊ
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात 12.75 श्री वर्मा जी के सामाजिक स्तर में बढ़ोत्तरी हुई। श्री वर्माजी कुल आय का 10 प्रतिशत सामाजिक स्तर, 25 प्रतिशत भोजन 40 प्रतिशत बचत 15 प्रतिशत धनराशि शिक्षा में व्यय करते हैं।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	अलग–अलग स्थानों पर 300 कृषक तकनीकी से जुड़े हैं। 250 कृषक यूनियन बैंक आफ इंडिया तथा निजी कम्पनियों के चयनित कृषकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।
10.	आधार संख्या	:	3394 9975 5371

माननीय कृषि मंत्री, भारत सरकार द्वारा सम्मानित श्री रमेश वर्मा

कृषक द्वारा फसल का अवलोकन

गाजीपुर

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	औषधीय एवं सुगन्धित पौधो की जैविक खेती
2.	विषय क्षेत्र	:	जैविक खेती साथ में पशुपालन एवं उद्यान
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री रंगबहादुर सिंह ग्राम एवं पोस्ट–अमौरा, ब्लाक दृभदौरा, तहसील – जमनियां जिला–गाजीपुर मो० 9795664257, उम्र–65 वर्ष, शिक्षा–इन्टरमीडिएट, क्षेत्रफल–4.5 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	प्रति इकाई उत्पादन एवं लाभ कम प्राप्त होना
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण		श्री सिंह औषधीय एवं सुगन्ध पौधों में एलोवेरा, सफेद मुसली, बच सतावर लेमनग्रास अश्वगंधा कालमेघ मिल्क थ्रिस्टल अन्डी एवं में औधानिक फसलें लेते हैं। साथ में डेरी तथा उद्यान को सम्मलित कर आय श्रजन कर रहे हैं
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	विविधीकरण ही एकमात्र रास्ता था जिससे आय बढ़ाई जा सकती थी। कृषि के साथ पशुपालन, उद्यान तथा औषधीय एवं सुंगध पौधों की खेती ने श्री सिंह को नई ऊर्जा दी जिससे उनकी आय 2.5 गुना तक बढ़ गयी।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके गाजीपुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	अपनी भूमि से उन्होने उक्त तकनीकी से लागत घटाकर शुद्ध अतिरिक्त 300000 रू. कमाएं। वीसी अनुपात 2.5
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	500 कृषक तकनीकी को अंगीकार कर चुके हैं तथा उन सभी का मार्गदर्शन तथा बाजार आदि श्री रंगबहादुर जी ही कर रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	अप्राप्त

खेत में आसवन इकाई के बारे में चर्चा करते हुए

श्री सिंह के फार्म पर वर्मी–कंपोस्ट इकाई का एक दृश्य

भदोही

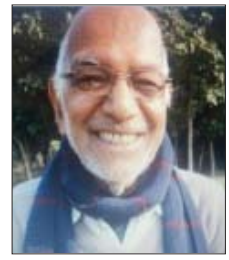

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	कालीन उद्योग हेतु अलसी रेसा का उद्योग
2.	विषय क्षेत्र	:	कालीन उद्योग
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री किशोर चन्द्र वर्नवाल ग्राम घाटमपुर, पोस्ट–खामरिया (औरई) जिला–भदोही मो० 9984819671, उम्र–73 वर्ष, शिक्षा–परास्नातक, क्षेत्रफल–17.5 एकड़ फसल–धान गेहूँ सब्जी फल, औषधीय फसलें चक्र–धान गेहूँ, सब्जी, पशुपालन–15 गाय भैंस राज्य जनपद स्तरीय–12 पुरस्कार
4.	समस्या / चुनौती	:	अच्छी गुणवत्ता का भेड़ ऊन मंहगा होने से कालीन उद्योग खर्चीला लागत अधिक अलसी रेसा से कालीन उद्योग में ऊन का विकल्प।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	कालीन उद्योग में ऊन कच्चा माल में प्रयोग होता है। भदोही कालीन उद्योग का बड़ा केन्द्र है। ऊन की बिक्री दर रू.200–250 / किग्रा. है। वर्नवाल जी ने लागत कम करने का विकल्प अलसी रेसा कालीन उद्योग में प्रयोग अलसी की नीलम प्रजाति जो कानपुर, कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित की गई उसे बोया जिससे 12.20 कुन्तल प्रति हेक्टेयर दाना तथा 9.70 कुन्तल रेसा प्रति हेक्टेयर प्राप्त हुआ। इससे लागत कम मुनाफा बढ़ा एवं कालीन उद्योग को सस्ती दर से अलसी रेखा कच्चा माल प्राप्त हुआ।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	इस तकनीकी से अलसी की खेती से शुद्ध लाभ तथा रेसा से कालीन उद्योग को सस्ता कच्चा माल मिलने से रोजगार के अवसर बढ़े एवं लाभ मिला।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	सी.एस.ए. कानपुर
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात 3.40, भेड़ ऊन की तुलना में सस्ता रेशा मिला। उक्त नवोन्मेष से कच्चे मॉल की लागत में कमी आयी, जिससे एक रुपये लागत लगाने पर ३.४० गुना कालीन उधोग से अधिक लाभ हुआ।
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	तकनीकी रूप से कालीन उद्योग में रेसा का प्रयोग शुद्ध अलसी फसल को उगाने का रास्ता खुला। सामाजिक आर्थिक रूप से ग्राह्यता बढ़ी। खेती से कच्चा माल कालीन उद्योग को प्राप्त होने लगा जिससे कालीन उद्योग भी लाभकारी हुआ।
10.	आधार संख्या	:	7310 4214 3488

अलसी फाइबर से बने कालीन

देवरिया

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	जीवन निर्वाह हेतु उद्यान आधारित एकीकृत कृषि मॉडल।
2.	विषय क्षेत्र	:	आई.एफ.एस. मॉडल
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री मोहन पाठक ग्राम–पठकौली, जिला देवरिया, उम्र–54 वर्ष शिक्षा–इन्टरमीडिएट, भूमि–13 एकड़ मो० 9415579995
4.	समस्या / चुनौती	:	धान गेहूँ फसल चक्र से उत्पादन एवं आय कम मिलने से पारिवारिक जीवन निर्वाह में कठिनाई।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	धान गेहूँ के साथ मत्स्य, बागवानी, सब्जी आदर्श एकीकृत फसल प्रणाली अपना कर एक दूसरे व्यवसाय कृषि मे मददगार होकर लागत घटाते हैं तथा प्रत्येक व्यवसाय से अलग–अलग आय प्राप्त होकर कुल आय में वृद्धि होती है। इससे फसल उत्पादकता एवं शुद्ध लाभ परम्परागत तरीके की तुलना में अधिक साथ ही रोजगार की सम्भावना बढ़ती है।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	भूमि का सुधार, पैदावार वृद्धि, पानी की बचत एवं संसाधनों का बेहतर उपयोग प्राकृतिक साधनों का अच्छा उपयोग गांवों से पलायन की गतिधीमी समृद्धि एवं प्रगति के अवसरों में वृद्धि
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके देवरिया
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	वीसी अनुपात सब्जी–3.84, मत्स्य–2.25 डेरी–2.8, बागवानी–4.5
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	इस तकनीको को उन्नत कृषि माडल कहा गया इसके क्षेत्र तथा आसपास के ग्रामों में मान्यता मिली एकीकृत कृषि विकास में महत्वपूर्ण माडल है। जिसे तेजी से अन्य किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है।
10.	आधार संख्या	:	3388 9623 0232

3 साहिवाल गाय के साथ पशुपालन

मछली उत्पादन

सीतापुर–1

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	लहसुन भिन्डी की गन्ने के साथ सहफसली (ड्रिप सिंचाई तथा पलवार की मदद से)
2.	विषय क्षेत्र	:	फसल विविधीकरण
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री हार्दिक मोरारका पुत्र श्री संजय मोरारका ग्राम–हसनपुर, पोस्ट सीतापुर जिला–सीतापुर मो० 9598743106, उम्र–30 वर्ष, शिक्षा–एम.बी.ए., क्षेत्रफल–15 एकड़
4.	समस्या / चुनौती	:	प्रति इकाई क्षेत्र से आय कम (पारम्परागत खेती से)
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री मोरारका जी ने लहसुन गोदावरी प्रजाति गन्ने के साथ सहफसली के रूप में लाइन से लाइन 4.5 '1.5 फीट पौधे से पौधे की दूरी गन्ने के बीच दो लाइन के बीच 3 लाईन लहसुन अक्टूबर अन्त में लगाया। फरवरी के अन्त में भिन्डी की एक लाइन गन्ने की दो लाइन के मध्य लगाई।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	इसी भूमि से गन्ने के अलावा लहसुन तथा भिन्डी से अतिरिक्त आय हुयी कुल दुगनी आय प्राप्त हुई। लहसुन 50 कुन्तल प्रति हेक्टेयर लेवर की लागत नमी संरक्षण तथा सिंचाई लागत में कभी उर्वरक तत्वों का संतुलित उपयोग से उत्पाद की गुणवत्ता एवं बाजार से अधिक लाभ मिला।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके सीतापुर – I।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	गन्ना के साथ लहसुन तथा भिन्डी से अतिरिक्त 450000 रू. लाभ मिला तथा गन्ना का उत्पादन अधिक मिला वी.सी अनुपात 4.25
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	इस तकनीकी का प्रसार तेजी से हो रहा है। कई किसान इस तकनीकी से सहफसली खेती कर लाभ उठा रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	3671 2153 8178

गार्लिक + लेडीफिंगर + शुगरकेन

गार्लिक + लेडीफिंगर + शुगरकेन

कौशाम्बी

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	द्वारका जैविक कृषि केन्द्र द्वारा वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाना।
2.	विषय क्षेत्र	:	जैविक खेती एवं वर्मी कम्पोस्ट खाद उत्पादन
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री उधौसिंह ग्राम एवं पोस्ट दृ निवादा, तहसील – चायक जिला – कौशाम्बी मो० 9450083008
4.	समस्या / चुनौती	:	अंधाधुंध रसायनिक खादों के प्रयोग से होने वाले नुकसान मृदा उर्वरता पर विपरीत प्रभाव को रोकना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री सिंह द्वारा 40 बेड से वर्मीकम्पोस्ट खाद तैयार की तथा वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन से रसायनिक खादों के बहुत अधिक प्रयोग के हानिकारक प्रभाव को रोका। उन्होंने द्वारिका जैविक कृषि केन्द्र के स्वयं सहायता समूह द्वारा इस व्यवसाय को बृहद रूप दिया तथा उत्पादन को बिक्री का रूप दिया। धीरे–धीरे किसानों द्वारा तथा सरकारी गैर सरकारी एजेन्सी काम करने लगी। उनकी आय बढ़ी तथा किसानों को बेहद लाभ मिला।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	क्षेत्र मे वर्मीकम्पोस्ट के प्रयोग से भूमि की दशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ। खेती मे जीवांश बढ़ा तथा गुणवत्ता मे सुधार से उत्पाद महंगा बिका तथा लाभ मे बढ़ोत्तरी हुई।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके कौशाम्बी तथा एन.सी.ओ.एफ. गाजियाबाद से ट्रेनिंग प्राप्त कर इस व्यवसाय से समृद्धि की ओर आगे बढे। इस इकाईयों की विजिट कर कृषि विभाग गाजियाबाद के वैज्ञानिक तथा अन्य कृषकों ने अवलोकन कर प्रेरणा ली।
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	कुल लागत – 141800, कुल लाभ – 281100 रु शुद्ध लाभ – 139300, सीवी अनुपात 1.2
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	अन्य किसान इस तकनीक को अपना रहे है। कृषक ग्रुप इसे रूचि के साथ कृषि का हिस्सा बना रहे हैं।
10.	आधार संख्या	:	अप्राप्त

द्वारिका जैविक कृषि केंद्र की इकाई

श्री उधौ सिंह इकाई में किसानों और ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं

औरैया

क्र.	कार्य विवरण / मद		विस्तृत अन्वेषण
1.	नवोन्मेषी का शीर्षक	:	डेरी फार्म के साथ बायोगैस से पंप सेट चलाकर सिंचाई की तकनीक
2.	विषय क्षेत्र	:	डेरी
3.	नवोन्मेषी का ब्यौरा	:	श्री कवीन्द्र सिंह पुत्र बलभद्र सिंह ग्राम–कटघेरा (बृहमन), पोस्ट–अयाना, जिला–औरैया, उम्र–55 वर्ष मो० 9267545509, शिक्षा–स्नातक
4.	समस्या / चुनौती	:	बायोगैस स्थापन हेतु बजट उपलब्धता की समस्या व्यवसायिक सिलिंडर भरने की दिशा में योजना तथा सिलिंडर की बिक्री से बृहद व्यवसाय स्थापित करना।
5.	अभिनव अभ्यास / तकनीक का विवरण	:	श्री सिंह जी द्वारा 2010 में 5 पशुओं से डेरी शुरू की तथा 15 पशु 2017 बढ़ाकर गोबर, दूध आदि से प्रबन्धन करके गोबर से गोबरगैस स्थापित कर गैस से पंप चलाकर सिंचाई करते हैं। डीजल की खपत मात्र 25 प्रतिशत होती है तथा दूध की बाजार में बिक्री होती है। उनका मानना है कि बड़े स्तर पर सिलिंडर भर कर बेचने का बड़ा प्लान हेतु आर्थिक मदद मिले तो इससे रोजगार सृजन होगा।
6.	व्यवहारिक उपयोगिता	:	तकनीकी डेरी के साथ गोबर गैस प्लांट तथा इंजन में गैस का प्रयोग गैस से सिलिंडर तैयार कर ईधन के रूप में बिक्री तथा इंजन से फसलों की सिंचाई तकनीकी, लोगों में रूचि पैदा कर रही है। धीरे–धीरे लोग प्रेरित हो रहे हैं। प्रतिदिन 80 लीटर दूध उत्पादन हो रहा है।
7.	तकनीक का स्त्रोत	:	केवीके औरैया
8.	आर्थिक / लाभांश कृषक नवोन्मेषी / नवोन्मेषी / क्षेत्र / परिवार	:	दूध उत्पादन 80 लीटर, कुल आय 84000 रू. प्रति माह लागत 34000 प्रति माह, लाभ द्द 50000 रू. प्रति माह वीसी अनुपात 2.47 साथ में पर्यावरण सुधार, मृदा सुधार डीजल बचत तथा रसोई मे ईधन की निःशुल्क आपूर्ति
9.	उपादेयता ग्राहता स्तर, नवोन्मेषी क्षैतिज प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या	:	स्वः रोजगार सृजन, अन्य लोगों के लिए प्रेरणादायक
10.	आधार संख्या	:	6968 5462 5591

सिलेंडर में जैव–गैस (खुद का नवाचार) के लिए जैव गैस संयंत्र और फसल सिंचाई के लिए जैव गैस पंप संचालित

गौपालन

ICAR-ATARI, G.T. Road, Rawatpur, Kanpur - 208 002
Phone : 0512 - 2533560, 2550927, 2554746, Fax : 0512-2533560, 2554746
Email : zpdicarkanpur@gmail.com, website : www.atarik.res.in